प्रथमपाठः

* संस्कृत भाषा में दस लकार होते हैं। उनमें पाँच लकारों का ही बोलचाल में अधिक प्रयोग होता है। उनके नाम और काल इस प्रकार हैं-

(१) लट्लकार: (वर्तमान काल) Present Tense
(२) लृट्लकार: (भविष्यत् काल) Future Tense
(३) लङ्लकार: (भूतकाल) Past Tense (Imperfect tense)
(४) लोट्लकार: (आदेश/प्रार्थना) (Imperative Mood) Order
(५) विधिलिङ्लकार: (प्रार्थना/चाहिए) (Potential Mood) Request

* संस्कृत में सामान्यत: आठ विभक्तियाँ (कारक) होती हैं। वे इस प्रकार हैं-(वैय्याकरण षष्ठी और सम्बोधन को कारक नहीं मानते हैं)

कारक		**Case**
(१) कर्ता = 'ने'	(प्र.)	Nominative
(२) कर्म = 'को'	(द्वि.)	Accusative
(३) करण = 'ने', से, द्वारा	(तृ.)	Instrumental
(४) सम्प्रदान = को, के लिए	(च.)	Dative
(५) अपादान = से	(पं.)	Ablative
(६) सम्बन्ध=का, के, की	(ष.)	Genitive
(७) अधिकरण=में, पर	(स.)	Locative
(८) सम्बोधन=हे ! भो !	(सम्बो.)	Vocative

प्रथमपुरुषः -

स:=वह (He) तौ=वे दो (Those two) ते=वे सब (They)

मध्यमपुरुषः -

त्वम्=तुम (You) युवाम्=तुम दोनों (You Two) यूयं=तुम सब (You All)

उत्तमपुरुषः -

अहम्=मैं (I) आवाम्=हम दोनों (We Two) वयं=हम सब (We All)

* उपर्युक्त रूपों में निम्न शब्दों को जोड़कर बोलने का अभ्यास करें-

किम्=क्या=What संस्कृतम्=संस्कृत=Sanskrit

कुत्र=कहाँ=Where तत्र=वहाँ=There

कदा=कब=When तदा=तब=Then प्रात:काले=सबेरे=In the morning

दिवा=दिन में=In day सायंकाले=सायं काल में=In the evening

विद्यालये=विद्यालय में=In the school गृहे=घर में=In the home मठे=मठ में=In the Matha.

* निम्न उदाहरण वाक्यों का अभ्यास करें-

(१) राम: संस्कृतं पठति=राम संस्कृत पढ़ता है।

(२) कृष्ण:रामं पश्यति=कृष्ण राम को देखता है।

(३) राम: बाणेन बालिं हन्ति=राम बाण से बालि को मारता है।

(४) रामाय पुस्तकं देहि=राम को पुस्तक दो।

(५) रामात् रावण: बिभेति=राम से रावण डरता है।

(६) रामस्य गृहं शोभनम् अस्ति=राम का घर अच्छा है।

(७) रामे श्रद्धां कुरु=राम में श्रद्धा करो।

(८) हे राम ! अत्र आगच्छ=हे राम यहाँ आओ।

* निम्न शब्दों को याद करें-

अत्र=यहाँ-Here	न=नहि-No
तत्र=वहाँ-There	एव=ही-Only
यत्र=जहाँ-Where	इत:=यहाँ से-From here
कुत्र=कहाँ-Where	तत:=वहाँ से-From there
किम्=क्या-What	यत:=जहाँ से-From where
अद्य=आज-Today	कुत:=कहाँ से-From where
इदानीम्=अब-Now	इत्थम्=ऐसे-Thus
यदा=जब-When	तथा=वैसे-So
तदा=तब-Then	कथम्=कैसे-How
कदा=कब-When	च=और-And
अपि=भी-Also	अलम्=बस-Enough
पर्याप्तम्=बस-Enough	शनै:=धीरे-Slow

झटिति=जल्दी-Quickly सद्य:=तुरन्त-At once

हठात्=एकाएक-Suddenly अकस्मात्=अचानक-Suddenly

* **शब्द एवं धातु के योग को ध्यान में रखते हुये निम्न रूपों को स्मरण में रखें-**

स: संस्कृतं पठति=वह संस्कृत पढ़ता है।
तौ संस्कृतं पठत:=वे दोनों संस्कृत पढ़ते हैं। (प्रथम पुरुष:)
ते संस्कृतं पठन्ति=वे सब संस्कृत पढ़ते हैं। (Third Person)

त्वं संस्कृतं पठसि=तुम संस्कृत पढ़ते हो।
युवां संस्कृतं पठथ:=तुम दोनों संस्कृत पढ़ते हो। (मध्यम पुरुष:)
यूयं संस्कृतं पठथ=तुम सब संस्कृत पढ़ते हो। (Second Person)

अहं संस्कृतं पठामि=मैं संस्कृत पढ़ता हूँ।
आवां संस्कृतं पठाव:=हम दोनों संस्कृत पढ़ते हैं। (उत्तम पुरुष:)
वयं संस्कृतं पठाम:=हम सब संस्कृत पढ़ते हैं। (First Person)

* **अब पहले आए हुए शब्दों के उदाहरण दिए जा रहे हैं, उन्हें ठीक से समझें तथा स्वयं भी वाक्य बनाने का अभ्यास करें-**

(१) स: छात्र: अत्र पठति=वह छात्र यहाँ पढ़ता है।
That student studies here.

(२) तत्र राम: कार्यं करोति=वहाँ राम काम करता है।
Ram works there.

(३) यत्र गच्छसि तत्र कार्यं कुरु=जहाँ जाते हो वहाँ काम करो।
Where ever you go work there.

(४) तव पुस्तकं कुत्र अस्ति? तुम्हारी पुस्तक कहाँ है?
Where is your book?

(५) किं तव नाम? तुम्हारा नाम क्या है?
What is your name?

(६) अद्य अवकाश: अस्ति=आज छुट्टी है।
It is holiday today.

(७) इदानीं भवान् किं करोति? अब आप क्या करते हैं?
Now, what do you do?

(८) यदा छात्रः न पठति तदा गुरुः तं ताडयति=जब छात्र नहीं पढ़ता है तब गुरुजी उसे मारते हैं।

When Student does not study then teacher beats him.

(९) त्वं कदा जागर्षि? तुम कब जागते हो?

When do you wake up?

(१०) अहम् अपि पठामि=मैं भी पढ़ता हूँ।

I also study.

(११) असत्यं न वद=असत्य मत बोलो।

Do not tell a lie.

(१२) सत्यम् एव वद=सत्य ही बोलो।

Speak truth only.

* उपर्युक्त **अत्र** से **एव** तक के शब्दों का प्रयोग करते हुये स्वयं भी वाक्यों की रचना करें।

इन श्लोकों को याद करें-

नारीमहिमा-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

पण्डितलक्षणम्-

निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानि न सेवते।
अनास्तिकः श्रद्धधानो ह्येतत् पण्डितलक्षणम्।।

मूर्खलक्षणम्-

अनाहूतः प्रविशति अपृष्टो बहुभाषते।
अविश्वस्ते विश्वसिति मूढचेता नराधमः।।

संकल्पः

पठने पाठने वार्तालापे प्रश्ने तथोत्तरे।
वदामि संस्कृतं सम्यक् सकलैः सह सर्वदा।।

***

द्वितीयपाठः

रामः इतः तत्र गच्छति=राम यहाँ से वहाँ जाता है।

Ram goes there from here.

गोपालः ततः अत्र आगच्छति=गोपाल वहाँ से यहाँ आता है।

Gopal comes here from there.

सः यतः आगच्छति तत्र गच्छति=वह जहाँ से आता है वहाँ जाता है।

From where he comes he goes there.

त्वं कुतः आगच्छसि? तुम कहाँ से आ रहे हो?

where do you come from?

इत्थं कार्यं कुरु=इस प्रकार कार्य करो।

Work like this.

यथा इच्छसि तथा कुरु=जैसा चाहते हो वैसा करो।

Whatever you like do that.

कथं न त्वं पाठं पठसि? क्यों नहीं तुम पाठ पढ़ते हो?

Why do you not study lesson?

अहं पठामि लिखामि च=मैं पढ़ता और लिखता हूँ।

I study and write.

अलं विवादेन=झगड़ा मत करो।

Do not quarrel.

भोजनं पर्याप्तम् अस्ति=भोजन पर्याप्त है।

Food is enough.

शनैः शनैः कार्यं कुरु=धीरे धीरे काम करो।

Work slowly.

झटिति अत्र आगच्छ=जल्दी यहाँ आओ।

Come here soon.

सद्यः सः अगच्छत्=वह अभी अभी गया।

Just now he went.

हठात् किमपि न कर्तव्यम्=जल्दीबाजी में कुछ भी नहीं करना चाहिए।

Do not do anything foveely/in hastiness.

अकस्मात् इदं कार्यम् अभवत्=अचानक यह काम हो गया।

Suddenly this work was done.

* **निम्न श्लोक को याद कीजिये-**

शनैः पन्थाः शनैः कन्थाः शनैः पर्वतलङ्घनम् ।
शनैर्विद्या शनैर्वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः ।।

अर्थ-

रास्ता चलना, कपड़ा बुनना, पर्वतारोहण करना, विद्याध्ययन करना एवं धनोपार्जन करना ये पाँच बातें धीरे-धीरे सम्पन्न की जाती हैं।

* **पठ् धातु के समान ही निम्न धातुओं के रूप चलायें-**

वद्	=	बोलना	=	To speak वदति
हस्	=	हँसना	=	To laugh हसति
खाद्	=	खाना	=	To eat खादति
चल्	=	चलना, जाना	=	To go चलति

* **तीनों लिङ्गों में धातु का एक ही रूप होता है। जैसे-**

बालकः पठति=बालक पढ़ता है=	Boy/child studies.
बालिका पठति=बालिका पढ़ती है=	Girl studies.
पत्रं पतति=पत्ता गिरता है=	Leaf falls down.

* याद रखें-संस्कृत में क्रिया को आगे, पीछे या बीच में कहीं भी रखा जा सकता है। जैसे-

रामः पुस्तकं पठति। पुस्तकं पठति रामः। पठति रामः पुस्तकम्।

अकारान्तपुलिंङ्गबालकशब्दः-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(प्र.)	बालकः	बालकौ	बालकाः
(द्वि.)	बालकम्	बालकौ	बालकान्

(तृ.)	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
(च.)	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
(पं.)	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
(ष.)	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
(स.)	बालके	बालकयोः	बालकेषु
(सम्बो.)	हे बालक !	हे बालकौ !	हे बालकाः !

* **स्मरण रहे अकार का मतलब 'अ' है तथा अकार हो जिस शब्द के अन्त में उसे अकारान्त कहते हैं।**

* जैसे-ब्=आ, ल्+अ, क्+अ=बालक इस के अन्त्य का अक्षर 'अ' है, अतः बालकशब्द अकारान्त हुआ।

* इसी प्रकार जितने भी अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द होंगे उनका रूप बालक शब्द के समान ही चलेंगे। यथा-राम, कृष्ण, केशव, शिव, देश, ग्राम, नृप, छात्र इत्यादि।

* **निम्न धातुओं के रूप 'पठ्' के समान ही चलेंगे-**

लिख्=लिखना=	To write	लिखति (पत्रम्)=किम्
गम् (गच्छ्) जाना=	To go	गच्छति (गृहम्)=कुत्र
दृश् (पश्य्)=देखना=	To see	पश्यति (चित्रम्)=किम्
पा=(पिब्)=पीना=	To drink	पिबति (जलम्)=किम्
क्रीड्=खेलना=	To play	क्रीडति (क्रीडांगणे)=कुत्र
खाद्=खाना=	To eat	खादतिं (फलम्)=किम्
पत्=गिरना=	To fall	पतति (पत्रम्)=किम्
प्रच्छ्=पूछना=	To ask	पृच्छति (प्रश्नम्)=किम्
स्था (तिष्ठ्)=रुकना=	To stay	तिष्ठति (मार्गे)=कुत्र

* उपर्युक्त धातुओं के साथ सः, तौ, ते जोड़कर आगे के कर्मों के आधार पर वाक्य बनायें।

उदाहरणम्-

सः किं पठति ? सः पुस्तकं पठति ।

यूयं किं पठथ ? वयं पुस्तकं पठामः ।

तौ किं पठतः ? तौ पुस्तकं पठतः।
ते किं पठन्ति ? ते पुस्तकं पठन्ति।
त्वं किं पठसि ? अहं पुस्तकं पठामि।
युवां किं पठथः ? आवां पुस्तकं पठावः।

* उपर्युक्त धातुओं में से 'पत्' धातु को छोड़कर सभी के साथ सः, तौ, ते जोड़कर अभ्यास करें।

निम्न श्लोकों को याद करें-

प्रथमाविभक्तिप्रयोगः

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र दैवं प्रसीदति।।

चतुर्थीप्रयोगः

विद्या विवादाय धनं मदाय
शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीतमेतत्
ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।।

सप्तमीप्रयोगः

आपणे मन्दिरे मार्गे गृहे विद्यालये सदा।
वदामि संस्कृतां वाणीं सकलैः मानवैः सह।।

***

तृतीयपाठः

*   निम्न धातुओं के अर्थों को समझते हुए 'पठ्' के तुल्य रूप चलायें-

वादयति=बजाता है	=	किम् (वाद्यम्) वाद्य
चिन्तयति=सोचता है	=	किम् (उपायम्) उपाय
सूचयति=सूचित करता है	=	किम् (वृत्तम्) समाचार
ताडयति=मारता है	=	किम् (कन्दुकम्) गेंद
चोरयति=चुराता है	=	किम् (पुस्तकम्) पुस्तक
स्थापयति=रखता है	=	किम् (धनम्) धन
प्रेषयति=भेजता है	=	किम् (वाहनम्) वाहन
स्वींकरोति=स्वीकार करता है	=	किम् (निमन्त्रणम्) निमन्त्रण
त्यजति=छोड़ता है	=	किम् (भयम्) डर
प्रक्षालयति=धोता है	=	किम् (वस्त्रम्) कपड़ा
प्राप्नोति=पाता है	=	किम् (ज्ञानम्) ज्ञान
उद्घाटयति=खोलता है	=	किम् (कपाटम्) दरवाजा
पिदधाति=बंद करता है	=	किम् (गवाक्षम्) खिड़की
ज्वालयति=जलाता है	=	किम् (दीपम्) दीया
निर्वापयति=बुझाता है	=	किम् (दीपम्) दीया
भवति=होता है	=	किम् (ज्ञानी) ज्ञानी

उदाहरणम्-(इस प्रकार अभ्यास करें)-

प्र० सः किं वादयति? उ०-सः वाद्यं वादयति। सः किं चिन्तयति? सः एकम् उपायं चिन्तयति। सः किं सूचयति? सः वृत्तं सूचयति। इसी प्रकार सभी पुरुषों एवं वचनों का अभ्यास करें।

*   निम्न शब्दों को ठीक से स्मरण कर प्रयोग करने का अभ्यास करें।

(इकारान्त पुंल्लिङ्ग 'मुनि' शब्द)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र.	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वि.	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृ.	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः

च.	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पं.	मुनेः	मुनिभ्यां	मुनिभ्यः
ष.	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
स.	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बो.	हे मुने !	हे मुनी !	हे मुनयः !

गुण-सन्धिः (आद्गुणः)-

अ या आ के बाद इ या ई हो तो दोनों के स्थान पर 'ए' तथा अ या आ के बाद उ या ऊ हो तो दोनों के स्थान पर 'ओ' होगा।

जैसे-

उप	+	इन्द्रः	=	उपेन्द्रः
गङ्गा	+	उदकम्	=	गङ्गोदकम्
महा	+	इन्द्रः	=	महेन्द्रः
यमुना	+	उदकम्	=	यमुनोदकम्
धर्म	+	ईश्वरः	=	धर्मेश्वरः
पाद	+	उदकम्	=	पादोदकम्
धन	+	ईशः	=	धनेशः
हस्त	+	उदकम्	=	हस्तोदकम्
नर	+	उत्तमः	=	नरोत्तमः

* निम्न भेदों को समझते हुए अभ्यास करें-

धातु	**वर्तमानकालः**	**भविष्यत्कालः**	**भूतकालः**	**आज्ञा/प्रार्थना**
गम्=जाना	गच्छति	गमिष्यति	गतवान्	गच्छतु
(To go)	जाता है	जायेगा	गया	जाये
आगम्=आना,	आगच्छति	आगमिष्यति	आगतवान्	आगच्छतु
(To come)	आता है	आयेगा	आया	आये
पठ्= पढ़ना,	पठति	पठिष्यति	पठितवान्	पठतु
(To read)	पढ़ता है	पढ़ेगा	पढा	पढे
लिख्=लिखना,	लिखति	लेखिष्यति	लिखितवान्	लिखतु
(To write)	लिखता है	लिखेगा	लिखा	लिखे
हस्=हँसना,	हसति	हसिष्यति	हसितवान्	हसतु
(To laugh)	हँसता है	हँसेगा	हँसा	हँसे

रुद्=रोना, रोदिति	रोदिष्यति	रुदितवान्	रुदतु
(To weep) रोता है	रोयेगा	रोया	रोये
खाद्=खाना, खादति	खादिष्यति	खादितवान्	खादतु
(To eat) खाता है	खायेगा	खाया	खाये
पा (पिब्)=पीना, पिबति	पास्यति	पीतवान्	पिबतु
(To drink) पीता है	पीयेगा	पीया	पीये
चल्=चलना/जाना, चलति	चलिष्यति	चलितवान्	चलतु
(To go) चलता है	चलेगा	चला	चले
धाव्=दौड़ना, धावति	धाविष्यति	धावितवान्	धावतु
(To run) दौड़ता है	दौड़ेगा	दौड़ा	दौड़े

* उपर्युक्त रूपों में सः=वह, सा=वह (स्त्री.) एषः=यह कः=कौन भवान्=आप रामः कृष्णः, आदि जोड़कर वाक्य बनायें।

यथा-

रामः गृहं गच्छति, गमिष्यति, गतवान् गच्छतु वा।

* स्त्रीलिङ्ग में वान् के स्थान पर वती लगेगा (भूत में) जैसे-गतवती पठितवती, लिखितवती आदि।

निम्नोक्त शब्दरूप को ठीक से याद करें-(उकारान्त पुंल्लिङ्ग गुरुशब्द)

प्र.	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वि.	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृ.	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
च.	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पं.	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
ष.	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
स.	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बो.	हे गुरो!	हे गुरू	हे गुरवः

* निम्न श्लोकों को ध्यान से पढ़ें-

प्रथमा-

बालकः गच्छति ग्रामं बालकौ गच्छतः गृहम् ।

बालकाः मन्दिरं यान्ति तत्र देवं नमन्ति च ।।

द्वितीया-

नमामि रामं रघुवंशनाथम्
नमामि रामौ रघुवंशनाथौ ।
नमामि रामान् रघुवंशनाथान्
नमामि सर्वान् च गुरून् तथैव ।।

स्वागतगीतम्-

महामहनीय मेधाविन् ! त्वदीयं स्वागतं कुर्मः ।
गुरो ! गीर्वाणभाषायाः त्वदीयं स्वागतं कुर्मः ।।
दिनं नो धन्यतममेतत् इयं मङ्गलमयी वेला ।
वयं यद्बालका एते त्वदीयं स्वागतं कुर्मः ।। महा०
न काचिद् भावनाभक्तिः न काचित् साधना-शक्तिः ।
परं श्रद्धासुमाञ्जलिभिः त्वदीयं स्वागतं कुर्मः ।। महा०
किमधिकं ब्रूमहे श्रीमन् ! निवेदनमेतदेवैकम् ।
न बाला विस्मृतिं नेयाः त्वदीयं स्वागतं कुर्मः ।। महा०

(आचार्य वासुदेव द्विवेदी)

* **इन प्रश्नों के उत्तर दें-**

(१) तव किं नाम अस्ति?
(२) भवतः किं नाम अस्ति?
(३) भवत्याः किं नाम अस्ति?
(४) तस्य किं नाम अस्ति?
(५) तस्याः किं नाम अस्ति?
(६) अस्य किं नाम अस्ति?
(७) अस्याः किं नाम अस्ति?
(८) एतस्य किं नाम अस्ति?
(९) एतस्याः किं नाम अस्ति?
(१०) भवतः गुरोः किं नाम अस्ति?

***

चतुर्थपाठः

* निम्न शब्दों को ठीक से याद करें-

उपाध्यायः=गुरु=Teacher	हस्तः=हाथ=Hand
शिष्यः=विद्यार्थी=Student	करः हाथ=Hand
सज्जनः=सज्जन=Gentleman	पादः=पैर=Leg
दुर्जनः=दुर्जन=Foe	गल्लः=गाल=Chick
प्रश्नः=प्रश्न=Question	स्कन्धः=कन्धा=Shoulder
वृक्षः=पेड़=Tree	दन्तः=दाँत=Tooth
प्रासादः=महल=Palace	ओष्ठः=होंठ=Lip
भूपः=राजा=King	केशः=केश=Hair
नरः=आदमी=Man	कर्णः=कान=Ear
पुरुषः=आदमी=Man	मोदकः=लड्डू=A kind of Sweet
जनः=आदमी=Man	शब्दः=शब्द=A Kind of word/sound
वर्णः=वर्ण/रंग=Colour	कृष्णः=कृष्ण/काला=Black
मनुष्यः=आदमी=Man	रक्तः=लाल=Red
कन्दुकः=गेंद=Ball	देवः=देव=God

सूचना- कः, सः और अयं शब्दों को जोड़कर उपर्युक्त २८ शब्दों के आधार पर आराम से ८४ वाक्य बनाये जा सकते हैं।

जैसे-

प्र०- कः उपाध्यायः = Who is teacner?

(अ) उ०- सः उपाध्यायः = He is teacher.

(ब) उ०- अयम् उपाध्यायः = This is teacher.

* यह ध्यान रहे कि संस्कृत में कृ=करना, भू=होना, अस्=होना, इन तीन धातुओं का बहुत ज्यादा महत्व है। अतः यथा सम्भव क्रमशः इन धातुओं के रूपों को समझने का प्रयत्न करें-

अस्=होना (To be) (१) लट् (वर्तमान काल)

प्रथमपुरुषः	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यमपुरुषः	असि	स्थः	स्थ
उत्तमपुरुषः	अस्मि	स्वः	स्मः

(२) लृट् (भविष्यत् काल)

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	(लृट् में अस् के स्थान
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	पर भू हो जाता है)
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	

(३) लङ् (भूतकाल)

आसीत्	आस्ताम्	आसन्
आसीः	आस्तम्	आस्त
आसम्	आस्व	आस्म

(४) लोट् (आदेश/प्रार्थना)

अस्तु	स्तां	सन्तु
एधि	स्तं	स्त
असानि	असाव	असाम

(५) विधिलिङ् (प्रार्थना/चाहिए)

स्यात्	स्यातां	स्युः
स्याः	स्यातं	स्यात
स्याम्	स्याव	स्याम

उदाहरणम्-

सः- अस्ति, भविष्यति, आसीत्, अस्तु, स्यात् ।

त्वम्- असि, भविष्यसि, आसीः एधि स्याः ।

अहम्-अस्मि, भविष्यामि, आसम्, असानि, स्याम् ।

* इसी प्रकार द्विवचन एवं बहुवचन में भी अभ्यास करें।

(परिचय-प्रकारः=परिचय के प्रकार)

प्रथमप्रकारः

मम नाम धर्मरत्नः = मेरा नाम धर्मरत्न है।

My name is Dharma Ratna.

भवतः नाम किम् ? = आपका नाम क्या है?

What is your name?

मम नाम केशवः=मेरा नाम केशव है।

My name is Keshava.

भवत्याः नाम किम्? (स्त्री.)=आपका नाम क्या है?

What is your name?

मम नाम रेखा=मेरा नाम रेखा है।

My name is Rekha.

मम नाम अर्जुनः=मेरा नाम अर्जुन है=

My name is Arjuna.

(द्वितीयप्रकारः)

अहं रमेशः = मैं रमेश हूँ = I am Ramesha.

भवान् कः? = आप कौन हैं? = Who are you?

अहं रामः = मैं राम हूँ = I am Rama.

अहं रेवती = मैं रेवती हूँ = I am Revati.

अहं रेखा = मैं रेखा हूँ = I am Rekha.

भवती का? (स्त्री.) = आप कौन हैं?= Who are you?

(तृतीयप्रकारः)

पुरुषोत्तमनामधेयोऽहम्। भारतदेशस्य उत्तरप्रदेशस्य वाराणसीनगरस्य निवासी अस्मि। राजकीये विद्यालये अष्टमकक्षायां पठामि, सं०सं०वि०वि० सम्भागे निवसामि।

* प्रत्येक संस्कृत के अभ्यास कर्ता को कम से कम उपर्युक्त तीनों परिचय प्रकार अवश्य याद होना चाहिए।

भू=होना (To be)

लट् (वर्तमानकाल)

भवति	भवतः	भवन्ति
भवसि	भवथः	भवथ
भवामि	भवावः	भवामः

लृट् (भविष्यत्काल)

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लङ् (भूतकाल)

अभवत्	अभवताम्	अभवन्
अभवः	अभवतम्	अभवत
अभवम्	अभवाव	अभवाम

लोट् (आदेश)

भवतु	भवताम्	भवन्तु
भव	भवतम्	भवत
भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् (प्रार्थना/चाहिए)

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
भवेः	भवेतम्	भवेत
भवेयम्	भवेव	भवेम

उदाहरणम्-

सः ज्ञानी भवति, भविष्यति, भवतु, अभवत् भवेत् वा।
त्वं ज्ञानी भवसि, भविष्यसि, अभवः, भव, भवेः वा।
अहं ज्ञानी भवामि, भविष्यामि, अभवम् भवानि, भवेयं वा।

* **इसी प्रकार द्विवचन एवं बहुवचन का पाँचों लकारों में अभ्यास करें। जैसे-**

(प्र.पु.) सः ज्ञानी भवति, तौ ज्ञानिनौ भवतः, ते ज्ञानिनः भवन्ति।
(म.पु.) त्वं ज्ञानी भवसि, युवां ज्ञानिनौ भवथः यूयं ज्ञानिनः भवथ।
(उ.पु.) अहं ज्ञानी भवामि, आवां ज्ञानिनौ भवावः, वयं ज्ञानिनः भवामः।

***

पञ्चमपाठः

घड़ी देखने का तरीका-

इदानीं कः समयः=अभी क्या समय हो रहा है?What is time now?

एकवादनम्=एक बजे हैं=It is one O'clock.

त्रिवादनम्=तीन बजे हैं=It is three O'clock.

द्विवादनम्=दो बजे हैं=It is two O'clock.

याद रखें-

साढ़े के लिए	=	सार्ध।
पौने के लिए	=	पादोन (पाद+ऊन)।
सवा के लिए	=	सपाद।
बजे के लिए	=	वादनम्।
घण्टा के लिए	=	घटिका/घण्टा।
मिनट के लिए	=	क्षणम्।

प्रयोगः-

सार्धद्वादशवादनम्	=	साढ़े १२
सपादद्वादशवादनम्	=	सवा १२
पादोनद्वादशवादनम्	=	पौने १२
दशोनपञ्चवादनम्	=	पाँच बजने में १० मिनट बाकी है।
दशक्षणाधिकपञ्चवादनम्	=	पाँच बजकर १० मिनट।

प्रश्नों के लिए-

का वेला?	=	क्या समय है?
कः समयः?	=	क्या समय है?

* **अब सावधानीपूर्वक निम्न शब्दों को स्मरण करें-**

कदा=कब=When किमर्थम्=किसलिए=Why

कथम्=कैसे=How अत:=इसलिए=Therefore

यत:=क्योंकि=Because किन्तु=किन्तु=But

प्रयोग: -

(कदा)

(१) भवान् कदा पठति?=आप कब पढ़ते हैं?

When do you study?

(२) राम: कदा उत्तिष्ठति?=राम कब उठता है?

When does Rama get up?

(३) कदा सीता लिखति?=सीता कब लिखती है?

When does Sita write?

(४) भवती कदा विद्यालयं गच्छति?=आप कब विद्यालय जाती हैं?

When do you go to school?

(किमर्थम्)

(१) किमर्थं स: गच्छति?=वह किसलिए जाता है?

Why does he go?

(२) किमर्थं भवान् पठति?=किसलिए आप पढ़ते हैं?

Why do you study?

(३) राम: किमर्थं कोलाहलं करोति? राम किसलिए हल्ला कर रहा है?

Why Ram is making a noice?

(कथम्)

(१) भवान् कथम् आगतवान्?=आप कैसे आये?

How did you come?

(२) भवती कथम् आगतवती?=आप कैसे आई?

How did you come?

(३) भोजनं कथम् अस्ति?=भोजन कैसा है?

How is food?

(किम्)

(१) राम: किं करोति?=राम क्या करता है?

What does Ram do?

(२) भवान् किम् इच्छति?=आप क्या चाहते हैं?

What do you want?

(१) गुरुः किं पाठयति?=गुरु क्या पढ़ाते हैं?

What does teacher teach?

(अतः)

गुरुः मम देवता, अतः तस्य वन्दनं करोमि=गुरुजी मेरे देवता हैं, अतः उनकी वन्दना करता हूँ।

Teacher is my god. Therefore, I pray him.

संस्कृतं विज्ञानस्य भाषा अस्ति अतः पठामि=संस्कृत वैज्ञानिक भाषा है इसलिए पढ़ता हूँ।

Sanskrit is a scientific Language. Therefore, I study it.

उदरे पीडा भवति अतः भोजनं न करोमि=पेट में दर्द है इसलिए भोजन नहीं करता हूँ।

I have stomach pain. Therefore, I do not take food.

अद्य रविवासरः अतः विद्यालयं न गच्छामि=आज रविवार है इसलिए विद्यालय नहीं जाता हूँ।

It is sunday today. Therefore, I do not go to school.

केशवः सर्वदा संस्कृतं वदति अतः मम मित्रम्=केशव हमेशा संस्कृत बोलता है इसलिए वह मेरा मित्र है।

Keshava always speaks Sanskrit. Therefore, he is my friend.

(यतः)

अहं संस्कृतं वदामि यतः संस्कृतं सर्वभाषाणां जननी अस्ति=मैं संस्कृत बोलता हूँ क्योंकि संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है।

I speak Sanskrit because Sanskrit is mother of all the Languages.

भोजनं न करोमि यतः उदरपीडा अस्ति=भोजन नहीं करता हूँ क्योंकि पेट में दर्द है।

I do not take food because I have stomach pain.

अद्य विद्यालयं न गच्छामि यतः अद्य रविवासरः अस्ति=आज विद्यालय नहीं जाता हूँ क्योंकि आज रविवार है।

I do not go to school because it is sunday today.

(किन्तु)

जनाः संस्कृतं जानन्ति किन्तु संभाषणं न कुर्वन्ति=लोग संस्कृत जानते हैं किन्तु संभाषण नहीं करते।

People know Sanskrit but they do not converse.

अद्य अवकाशः अस्ति किन्तु विद्यालयं गच्छामि=आज छुट्टी है किन्तु विद्यालय जाता हूँ।

It is holiday today but I go to school.

अपि (भी) also

अहं हिन्दीम् अपि जानामि=मैं हिन्दी भी जानता हूँ।

I know Hindi also.

अहं दुग्धम् अपि पिबामि=मैं दूध भी पीता हूँ।

I drink milk also.

न केवलं, किन्तु, अपि

न केवलं रामचन्द्रः वनं गतवान्, किन्तु लक्ष्मणः अपि वनं गतवान्= न केवल रामचन्द्र वन गये किन्तु लक्ष्मण भी गये।

अनुस्वार-सन्धिः (मोऽनुस्वारः)

शब्द के अन्तिम मकार के बाद हल् (ह् य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न् झ् भ् घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द् ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स् ह्) अर्थात् व्यञ्जन वर्ण हों तो म् को अनुस्वार (ं) होता है।

उदाहरणम्-

हरिम्+नमामि=हरिं नमामि। गृहम्+गच्छति=गृहं गच्छति।

पाठम्+पठति=पाठं पठति। मन्त्रम्+जपति=मन्त्रं जपति।

अहम्+गच्छामि=अहं गच्छामि। धनम्+ददाति=धनं ददाति।

याद रखें-

यदि पदान्त म् के बाद अच् (अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ) अर्थात् स्वर हों तो म् को अनुस्वार नहीं होगा।

जैसे– अहम् इच्छामि।

व्यञ्जन वर्ण को स्वरवर्ण में मिलाया जा सकता है। जैसे-

अहम्+अस्मि=अहमस्मि। धनम्+अस्ति=धनमस्ति

ज्ञानम्+अस्ति=ज्ञानमस्ति। नेत्रम्+अस्ति=नेत्रमस्ति

इन श्लोकों को याद करें-

धर्मतत्वम्-

श्रूयतां सर्वधर्मस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

चरित्रस्य महत्वम्-

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्तम् आयाति याति च।

अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।।

जीवने के सफलाः भवन्ति?-

सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।

शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्।।

किं कर्तव्यम्?

संस्कृतेन संभाषणं कुरु जीवनस्य परिवर्तनं कुरु ।

यत्र यत्र गच्छसि पश्य तत्र संस्कृतं, संस्कृतेः संरक्षणं कुरु ।।

***

षष्ठ:पाठः

याद रखें-

* संस्कृत भाषा में सम्पूर्ण शब्दराशि को तीन भागों में बाँटा गया है-

(१) पुल्लिङ्गः, (२) स्त्रीलिङ्गः, (३) नपुंसकलिङ्गः।

पुनः अजन्त (अच्+अन्तः) अर्थात् स्वरान्त तथा हलन्त (हल्+अन्तः) अर्थात् व्यञ्जनान्त के भेद से उपर्युक्त तीन विभागों के दो दो भेद होते हैं। ***जैसे-***

(१) अजन्तपुल्लिङ्ग-राम, हरि, गुरु, पितृ आदि।

(२) अजन्तस्त्रीलिङ्ग-रमा, मति, नदी, धेनु, वधू आदि।

(३) अजन्तनपुंसकलिङ्ग-ज्ञान, वारि, वस्तु आदि।

(४) हलन्तपुल्लिङ्ग-मघवत्, बलवत्, राजन् आदि।

(५) हलन्तस्त्रीलिङ्ग-वाक्, गिर्, परिषद् आदि।

(६) हलन्तनपुंसकलिङ्ग-पयस्, धनुष् आदि।

निम्नोक्त शब्दरूपों के अभ्यास से प्रायः पुल्लिङ्ग का ज्ञान हो जाता है-

रामः हरिः करी भानुः मरुत् कर्ता च चन्द्रमाः ।
विद्वान् च भगवान् आत्मा दशैते पुंसि नायकाः ।।

* अतः प्रत्येक संस्कृत के अभ्यासकर्ता को शनैः शनैः उपर्युक्त शब्दों को स्मरण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

णत्व (न् को ण्)

ध्यान से समझें-

* एक पद में र् और ष् के बाद न् हो तो उसको यानि न् को ण् होगा। तथा अट् (अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह् य् व् र्) कवर्ग (क् ख् ग् घ् ङ्) पवर्ग (प् फ् ब् भ् म्) आङ् (आ) नुम् (न्) इतने अक्षरों के व्यवधान होने पर भी न् को ण् होगा। तात्पर्य यह कि र् न् या ष् न् के बीच में ऊपर गिनाये गये वर्णों में से कोई आयेगा तो भी णत्व में बाधक नहीं बनेगा।

जैसे-रामेन यहाँ र् के बाद (आ, म्, ए) तीन वर्ण हैं, उसके बाद न् है तो भी न् को ण् हो गया। क्योंकि आ एवं ए अट् में तथा

म् पवर्ग में आता है। तब न् को ण् होकर रामेण बन गया। कृष्णेन में ष् के बाद ण् है अतः णत्व नहीं होगा; जबकि लक्ष्मीनाम् में न् को ण् होगा क्योंकि क्+ष्=क्ष् के बाद म् है उसके बाद ई है जो उपर्युक्त वर्णित अक्षरों में आते हैं।

यण् सन्धिः (इको यणचि)-

इ, उ, ऋ, ऌ के बाद असमान स्वर हो तो इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ ॠ को र् एवं ऌ को ल् होता है। जैस-

सुधी+उपास्यः यहाँ पर सुधी में ई है उसके बाद असमान स्वर उ है। अतः सुधी के ईकार के स्थान में य् हुआ तो सु ध् य् उपास्यः बना, इसके बाद 'अच् हीनं परेण संयोज्यम्' (अर्थात् स्वर रहित वर्ण को आगे मिलाना चाहिए) इस नियम से य् आगे के उ में मिला। ध् य् में मिला तो सुध्युपास्यः बन गया।

* स्मरण रहे-इक् (इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ) के स्थान में यण् (क्रमशः य् व् र् ल्) होते हैं। इसी का नाम यण्सन्धि है।

इसी प्रकार-

कवि+अत्र=कव्यत्र (इ को य्) रवि+अस्ति=रव्यस्ति (इ को य्)
भानु+अस्ति=भान्वस्ति (उ को व्) पितृ+आ=पित्रा (ऋ को र्)
ऌ+आकृतिः=लाकृतिः (ऌ को ल्)

प्रयोगः-

सह = **साथ** = With विना = विना = Without
इति = ऐसा = So च = और = And

सह-

सः रामेण सह गृहं गच्छति=वह राम के साथ घर जाता ह।
He goes home with Ram.
अहं बालकेन सह पठामि=मैं बालक के साथ पढ़ता हूँ।
I study with boys/children.
पत्न्या सह पतिः गच्छति=पत्नी के साथ पति जाता है।
Husband goes with his wife.
गुरुणा सह छात्रः गच्छति=गुरु के साथ छात्र जाता है।
Student goes with his teacher.

इसी प्रकार-

रमया सह, सीतया सह, बालिकया सह, त्वया सह, कया सह, केन सह, तेन सह आदि में भी समझना चाहिए।

विना-

धर्मं विना सुखं न भवति=धर्म के विना सुख नहीं है।

There is no pleasure without Dharma.

संस्कृतं विना संस्कृतिः नास्ति=संस्कृत के विना संस्कृति नहीं।

There is no culture without Sanskrit.

परिश्रमं विना विद्या न भवति=परिश्रम के विना विद्या नहीं होती।

There is no knowledge without labour.

बुद्धिं विना कार्यं न चलति=बुद्धि के विना काम नहीं होता है।

No work without knowledge.

इसी प्रकार-

ज्ञानेन विना, पुस्तकं विना, लेखनीं विना, भोजनं विना आदि बहुत से वाक्य बनायें।

इति रमेशः सदा संस्कृतं वदति, इति रामः उक्तवान्।

रमेश हमेशा संस्कृत बोलता है, ऐसा राम ने कहा।

अहं न पठामि इति सः उक्तवान्।

मैं नहीं पढ़ता हूँ, ऐसा उसने कहा।

सः मूर्खः अस्ति इति अहं जानामि।

वह मूर्ख है ऐसा मैं जानता हूँ।

चकारप्रयोगः-

मम परिवारे माता, पिता, भ्राता, भगिनी भातृजाया च सन्ति= मेरे परिवार में माँ, पिता, भाई, बहन और भाभी हैं।

संस्कृतं सरलं मधुरं च अस्ति=संस्कृत सरल और मधुर है।

याद करें

उत्तिष्ठत जाग्रत लज्जां त्यजत ।
संस्कृतस्य रक्षणाय सज्जा भवत ।।

***

सप्तमपाठः

सूचना-

* बालकों एवं बालिकाओं को इस प्रकार वर्णमाला सिखायें-

अ	=	अरविन्दम्	=	कमल का फूल	Lotus.
आ	=	आम्रम्	=	आम	Mango.
इ	=	इन्द्रधनुः	=	इन्द्रधनुष	Rainbow.
ई	=	ईश्वरः	=	भगवान्	God.
उ	=	उलूकः	=	उल्लू	Owl.
ऊ	=	ऊर्णनाभः	=	मकड़ा	Spider.
ऋ	=	ऋषिः	=	ऋषि	Hermit.
ए	=	एकम्	=	एक	One.
ऐ	=	ऐरावतः	=	हाथी का नाम	Name of elephant
ओ	=	ओष्ठः	=	होंठ	Lip.
औ	=	औषधम्	=	दवाई	Medicine.
क	=	कच्छपः	=	कछुआ	Tortoise.
ख	=	खनित्रम्	=	खुदनी	A tools to dig.
ग	=	गदा	=	गदा	A Kind of weapon.
घ	=	घटः	=	घडा	Water pot.
ङ	=	अङ्गः	=	अङ्ग	Parts of body.
च	=	चमसः	=	चम्मच	Spoon.
छ	=	छगलः	=	बकरा	Goat.
ज	=	जवा	=	जौ	Barley.
झ	=	झरः	=	झरना	Water spring.
ञ	=	चञ्चू	=	चोंच	Beak.
ट	=	टङ्कः	=	मुद्रा	Currency.

ठ	=	ठक्कुर:	=	ठाकुरजी	God.
ड	=	डमरु:	=	डमरु	A Kind of drum
ढ	=	ढक्का	=	डमरु	A Kind of drum
ण	=	पण:	=	पैसा	Paise.
त	=	तडाग:	=	तालाब	Pond.
थ	=	थूत्कार:	=	थू करना	Spit.
द	=	दन्त:	=	दाँत	Tooth.
ध	=	धनु:	=	धनु	Bow.
न	=	नयनम्	=	आँख	Eye.
प	=	पनसम्	=	कटहल	Jack-fruit.
फ	=	फण:	=	सर्प का फण	Head of a snake
ब	=	बक:	=	बगुला	Crane.
भ	=	भल्लुक:	=	भालु	Bear.
म	=	मयूर:	=	मोर .	Peacock.
य	=	यति:	=	सन्यासी	Hermit.
र	=	रथ:	=	रथ	Chariot.
ल	=	लता	=	लता	Creeper.
व	=	वट:	=	बर का पेड़	Name of a religious tree
श	=	शशक:	=	खरगोश	Rabbit
ष	=	षण्ड:	=	साँड	Ox
स	=	सरट:	=	छिपकली	Lizard
ह	=	हलम्	=	हल	Plough
क्ष	=	क्षुर:	=	उस्तरा	Blade
त्र	=	त्रिशूलम्	=	त्रिशूल	Trisul
ज्ञ	=	ज्ञानी	=	ज्ञानी	Wiseman

ठीक से निम्न पद्यों को पढ़ें-

अहं पठामि संस्कृतम् अहं वदामि संस्कृतम् ।
अहं लिखामि संस्कृतम् सदैव सुन्दराक्षरम् ॥
अहं स्मरामि मातरम् अहं भजामि मातरम् ।
अहं नमामि मातरम् सदैव भक्तिपूर्वकम् ॥

ध्यान से स्मरण करें-

एकवचन		बहुवचन	
अहम्=मैं/मैंने	I	वयम्=हम/हमने	We
माम्=मुझको	Me	अस्मान्=हमको	Us
मया=मुझसे/मैंने	I/By me	अस्माभि:=हमसे/हमने	We/By us
मह्यम्=मुझे/मेरे लिए	For me	अस्मभ्यम्=हमें/हमारे लिए	For us.
मत्=मुझसे	From me	अस्मत्=हमसे	From us.
मम=मेरा, मेरी, मेरे	Mine/My	अस्माकम्=हमारा	Our.
मयि=मुझमें	In me	अस्मासु=हममें	Among us.

इसी प्रकार-

त्वम् = तू/तूने = Thou/you.
त्वाम् = तुझे = To you.
त्वया = तुमसे/तुमने = By you.
तुभ्यम् = तुम्हें/तेरे लिए = For you.
त्वत् = तुमसे = From you.
तव = तुम्हारा/तेरा = Your's
त्वयि = तुममें/तुझमें = In you
यूयम् = तुम लोग/तुम लोगों ने = You all.
युष्मान् = तुम लोगों को = To you.
युष्माभि: = तुम लोगों से/ने = By you all.
युष्मभ्यम् = तुम लोगों के लिए = For you.
युष्मत् = तुम लोगों से = From you people.
युष्माकम् = तुम लोगों का = Yours.
युष्मासु = तुम लोगों में = Among you.

अब इस प्रकार प्रयोग करें-

अहं संस्कृतं पठामि=मैं संस्कृत पढ़ता हूँ। I study Sanskrit.
रामः मां पश्यति=राम मुझको देखता है। Ram looks me.
त्वं मया सह चल=तुम मेरे साथ चलो। You walk with me.
मह्यं फलं देहि=मुझे फल दो। Give me fruits.

मत् भयं कुरु=मुझसे डर करो। Scare from me.
मम नाम गोपाल:=मेरा नाम गोपाल है। My name is Gopal.
मयि दया अस्ति=मुझमें दया है। There is kindness in me.

इसी प्रकार-

त्वं संस्कृतं पठसि=तुम संस्कृत पढ़ते हो। You study Sanskrit.
रामः त्वां पश्यति=राम तुझे देखता है। Ram looks you.
त्वया सह अहं चलामि=तेरे साथ मैं चलता हूँ। I go with you.
तुभ्यं पुस्तकं ददामि=तुझे पुस्तक देता हूँ। I give you a book.
त्वत् भयं भवति=तुझसे डर लगता है। I scared from/of you.
तव नाम किम् अस्ति?=तुम्हारा नाम क्या है? what is your name?
त्वयि दया अस्ति=तुझमें दया है। There is kindness in you.

अब निम्न श्लोकों को याद करें-

त्वम् एव माता च पिता त्वम् एव।
तुम ही हो माँ और पिता तुम ही हो।

त्वम् एव बन्धुः च सखा त्वम् एव।
तुम ही हो बन्धु और साथी तुम ही हो।

त्वम् एव विद्या द्रविणं त्वम् एव।
तुम ही हो विद्या धन भी तुम ही हो।

त्वम् एव सर्वं मम देवदेव !
तुम ही हो सब कुछ मेरे देवदेव !

एषः हस्तः दक्षिणहस्तः, एषः वामहस्तः।
यह हाथ दाहिना हाथ यह बाँया हाथ।

एषः पादः दक्षिणपादः, एषः वामपादः।
यह पैर दाहिना पैर यह बाँया पैर।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सभी होवें सुखी सभी होवें नीरोग।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।
सभी कल्याण देखें नहीं कोई दुःखी होवे।

दीर्घसन्धिः (अकः सवर्णे दीर्घः)-

अ इ उ ऋ ऌ के बाद समान अक्षर बाद में हो तो दीर्घ सन्धि होती है। यथा-

दैत्य+अरिः=दैत्यारिः, विद्या+आलयः=विद्यालयः
श्री+ईशः=श्रीशः, भानु+उदयः=भानूदयः
होतृ+ऋकारः=होतृकारः। (ऌ का उदाहरण नहीं मिलता है।)

इन श्लोकों को याद करें-

केन कं जयेत्?

अक्रोधेन जयेत् क्रोधम् असाधुं साधुना जयेत्।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्।।

मतिमान् किं किं न प्रकाशयेत्-

अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च।
वञ्चनं चापमानं च मतिमान् न प्रकाशयेत्।।

किमर्थं सरलेन न भाव्यम्?

नात्यन्तं सरलैर्भाव्यं गत्वा पश्य वनस्थलीम्।
छिद्यन्ते सरलास्तत्र कुब्जाः तिष्ठन्ति पादपाः।।

***

अष्टमपाठः

व्यवहारोपयोगी शब्द एवं प्रयोग-

शरीरम्	=	शरीर	=	Body.
शिरः	=	शिर	=	Head.
केशः	=	केश	=	Hair.
नेत्रम्	=	आँख	=	Eye.
मुखम्	=	मुख	=	Mouth.
उदरम्	=	पेट	=	Stomacl
जिह्वा	=	जीभ	=	Tongue.
कर्णौ	=	दो कान	=	Two ears
दन्ताः	=	दाँत	=	Teeth.
भुजौ	=	दो भुजायें	=	Two arms.
हस्तौ	=	दो हाथ	=	Two hands.
अङ्गुलयः	=	अङ्गुलियाँ	=	Fingers.
पादौ	=	दो पैर	=	Two legs.
काष्ठासनम्	=	बंच	=	Bench.
कञ्चुकः	=	कुर्ता	=	Shirt.
अधोवस्त्रम्	=	धोती	=	Dhoti.
साटिका	=	साड़ी	=	Saree.
अङ्गप्रोक्षकम्	=	अंगोछा	=	Towel.
पादयामः	=	पायजामा	=	Trousers.
पादत्राणम्	=	जूता	=	Shoe.
क्रीडाक्षेत्रम्	=	खेल का मैदान	=	Play ground.
क्रीडकः	=	खिलाड़ी	=	Player.

पादकन्दुकः	=	फुटबाल	=	Football.
आसन्दिका	=	कुर्सी	=	Chair.
फलकम्	=	मेज	=	Table.
लेखनपीठम्	=	डेस्क	=	Desk.
मुखप्रोक्षकम्	=	रुमाल	=	Handkerchief.

प्रयोगः -

इदं मम शरीरम् अस्ति=यह मेरा शरीर है।

It is my body.

मम शिरसि केशाः सन्ति=मेरे शिर पर केश हैं।

I have hair on head.

मम द्वे नेत्रे स्तः=मेरे दो आँखें हैं।

I have two eyes.

अहं नेत्राभ्यां पश्यामि=मैं आँखों से देखता हूँ।

I see with my eyes.

अहं मुखेन वदामि=मैं मुख से बोलता हूँ।

I speak from my mouth.

मम मुखे जिह्वा दन्ताः च सन्ति=मेरे मुख में जीभ और दाँत हैं।

I have a tongue and teeth in my mouth.

मम द्वौ कर्णौ स्तः=मेरे दो कान हैं।

I have two ears.

अहं प्रतिदिनं कञ्चुकम्, अधोवस्त्रम्, पादत्राणं च धारयामि=मैं रोज कुर्ता, धोती और जूते पहनता हूँ।

I wear daily Dhoti shirt and shoes.

सः अङ्गप्रोक्षकेण शरीरं मुखप्रोक्षकेण च मुखं मार्जयति=वह अंगाछे से शरीर और रुमाल से मुँह पोछता है।

He cleans body by Towel and cleans face with handkercheief.

त्वं पादयामं धारयसि=तुम पायजामा पहनते हो।

You wear Payajama/Trousers.

सा महिला शाटिकां धारयति=वह महिला साड़ी पहनती है।

That lady wears Saree.

इदं क्रीडाक्षेत्रम् अस्ति=यह खेल का मैदान है।

This is play ground.

क्रीडाक्षेत्रे क्रीडकाः पादकन्दुकेन क्रीडन्ति=खेल के मैदान में खिलाड़ी फुटबाल खेलते हैं।

The players play with football in the playground.

अयादिसन्धिः (एचोऽयवायावः)-

एच् (ए ओ ऐ औ) के बाद अच् (अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ) हो तो क्रमशः ए को अय् ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् होता है। यदि पदान्त ए और ओ के बाद अ होगा तो नहीं।

उदाहरणम्-

हरे+ए हर्+अय्+ए	=	हरये
कवे+ए कव्+अय्+ए	=	कवये
विष्णो+ए विष्ण्+अव्+ए	=	विष्णवे
भानो+ए भान्+अव्+ए	=	भानवे
नै+अकः न्+आय्+अकः	=	नायकः
गै+अकः ग्+आय्+अकः	=	गायकः
पौ+अकः प्+आव्+अकः	=	पावकः
भौ+अकः भ्+आव्+अकः	=	भावकः
हरे+अव हरेऽव, विष्णो+अव	=	विष्णोऽव (यहाँ नहीं होगा)

निम्न शब्दरूपों को याद कीजिये-

पितृ (पिता) ऋकारान्त पुंल्लिङ्गः

(प्र)	पिता	पितरौ	पितरः	(तृ)	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
(द्वि)	पितरम्	पितरौ	पितॄन्	(च)	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः

(प) पितुः पितृभ्याम् पितृभ्यः (स) पितरि पित्रोः पितृषु
(ष) पितुः पित्रोः पितृणाम् (सम्बो)हे पितः! हे पितरौ!हे पितरः!

सूचना-

* पहले के पाठों में आए हुये बालक, मुनि एवं गुरु शब्दों का अभ्यास नहीं छूटना चाहिये। पितृ शब्द का प्रयोग भी उसी प्रकार करें।

व्यवहारोपयोगी शब्द-

कम्बलः=कम्बल=Blanket
भक्तम्=भात=Boiled rice
गृहम्=घर=Home
नीशारः=रजाई=Quilt
शाकः=साग=Green Vegetable
द्वारम्=दरवाजा=Door
शिरस्कम्=टोपी=Cap
मिष्टान्नम्=मिठाई=Sweets
गवाक्षः=खिड़की=Window
घृतम्=घी=Butter/Ghee
पाचकः=रसोइया=Cook
सिता=चीनी=Sugar.
भवनपृष्ठम्=छत=Roof.
रोटिका=रोटी=Bread.
मोदकः=लड्डू=A kind of sweet.
सोपानम्=सीढ़ी=Ladder.
सूपः=दाल=Pulses.
नवनीतम्=मक्खन=Butter.
प्रासादः=महल=Palace.

प्रयोगः-

(१) अहं कम्बलेन नीशारेण च स्वकीयं शरीरम् आच्छादयामि=मैं कम्बल और रजाई से अपने शरीर को ढकता हूँ।

I cover my body with blanket and quilt.

(२) अहं शिरसि शिरस्कं धारयामि=मैं शिर पर टोपी पहनता हूँ।

I wear cap on my head.

(३) पाचकः रोटिकां सूपं भक्तं च पचति = रसोइया रोटी दाल और भात पकाता है।

The cook cooks pulses, rice and breads.

(४) शाकः शोभनः अस्ति=शाग अच्छा है।

Green vegetable is good.

(५) रामः प्रतिदिनं मिष्टान्नं, सितां, मोदकं, नवनीतं घृतं च खादति=राम रोज मिठाई, चीनी, लड्डू, मक्खन और घी खाता है।
Ram daily takes sweet, sugar, butter and ghee.

(६) मम गृहस्य द्वारं शोभनम् अस्ति=मेरे घर का दरवाजा अच्छा है।

There is good door at my home.

(७) मम गृहे पञ्च गवाक्षाः सन्ति=मेरे घर में पाँच खिड़कियाँ हैं।

There are five windows in my home.

(८) मम गृहस्य प्राङ्गणम् अति शोभनम् अस्ति=मेरे घर का आँगन बहुत अच्छा है।

There is good courtyard at my home.

(९) अहं प्रतिदिनं सोपानेन भवनपृष्ठं गच्छामि=मैं प्रतिदिन सीढ़ी से छत पर जाता हूँ।

I daily go on roof by/through ladder.

(१०) प्रासादे धनिकाः निवसन्ति=महल में धनी लोग रहते हैं।
Rich people live in palace.

निम्न श्लोकों को याद करें-

कस्य कदा प्रशंसा कार्या?

प्रत्यक्षे गुरवः स्तुत्याः परोक्षे मित्रबान्धवाः।
कर्मान्ते दासभृत्याश्च पुत्रा नैव च नैव च।।

कस्य प्रसन्नता भयङ्करी-

क्षणे तुष्टा क्षणे रुष्टाः तुष्टाः रुष्टाः क्षणे क्षणे।
अव्यवस्थितचित्तानां प्रसादोऽपि भयङ्करः।।

गुह्यं ब्रह्म किमस्ति?

गुह्यं ब्रह्म तदिदं वो ब्रवीमि।
न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्।।

***

नवमपाठः

निम्न शब्द रूप को ठीक से याद करें-

प्र. रमा	रमे	रमाः	पं. रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
द्वि. रमाम्	रमे	रमाः	ष. रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
तृ. रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः	स. रमायाम्	रमयोः	रमासु
च. रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः	सम्बो. हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

(इसका पूर्वोक्त प्रकार से ही प्रयोग करें)

सूचना-

गुण, यण, दीर्घ, एवं अयादि सन्धियों को पुनः देख लें।

पूर्वरूपसन्धिः (एङः पदान्तादति)-

पदान्त ए या ओ के बाद अ हो तो पूर्वरूप सन्धि होती है (अर्थात् बाद वाला अ आकर पहले वाले ए या ओ में मिल जाता है, यहाँ पूर्वरूप हुआ है, ऐसा ज्ञान कराने के लिए खण्ड अकार या अवग्रह चिह्न (ऽ) अ के स्थान में लगता है, किन्तु उसका उच्चारण नहीं किया जाता है। जैसे-

हरे+अव = हरेऽव। (हे हरि रक्षा करो)
विष्णो+अव = विष्णोऽव। (हे विष्णु रक्षा करो)
भानो+अव = भानोऽव। (हे सूर्य रक्षा करो)

* स्मरण रहे-शब्द मुख्यतः छ प्रकार के थे (षष्ठपाठ देखें) इसी प्रकार धातुओं को भी उनकी विशेषताओं के आधार पर दस भागों में विभक्त किया गया है। गण के नाम ये हैं-

(१) भ्वादिः (भू+आदिः) (२) अदादिः (अद्+आदिः) (३) जुहोत्यादिः (जुहोति+आदिः) (४) दिवादिः (दिव्+आदिः) (५) स्वादिः (सु+आदिः) (६) तुदादिः (तुद्+आदिः) (७) रुधादिः (रुध्+आदिः) (८) तनादिः (तन्+आदिः) (९) क्रयादिः (क्री+आदिः) (१०) चुरादिः (चुर्+आदिः)।

(१) मुख्यत: धातु के तीन भेद होते हैं-

(अ) परस्मैपदी। (ब) आत्मनेपदी। (स) उभयपदी (परस्मैपदी+ आत्मनेपदी)।

(२) पुन: धातु तीन प्रकार के होते हैं-

(अ) सकर्मक (कर्मवाला) (ब) अकर्मक (बिना कर्म का)

(स) द्विकर्मक (दो कर्मवाला)

(३) धातु के दो अर्थ होते हैं-

(अ) फल। (ब) व्यापार।

* निम्नलिखित आत्मनेपदरूपों को ठीक से हृदयंगम करें। सेव् (सेवा करना)। लट् (वर्तमान काल)।

प्र०पु०	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
म०पु०	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उ०पु०	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

प्रयोग:-

स: गुरुं सेवते, तौ गुरुं सेवेते, ते गुरुं सेवन्ते, त्वं गुरुं सेवसे, युवां गुरुं सेवेथे, यूयं गुरुं सेवध्वे, अहं गुरुं सेवे, आवां गुरुं सेवावहे, वयं गुरुं सेवामहे।

वाच्यप्रयोग:-

संस्कृत में तीन वाच्य होते है-

(१) कर्तृवाच्य (जिसमें कर्ता मुख्य हो)।

(२) कर्मवाच्य (जिसमें कर्म मुख्य हो)।

(३) भाववाच्य (जिसमें भाव (क्रिया) मुख्य हो)।

सामान्य उदाहरण-

(१) अहं पुस्तकं पठामि (कर्तृ.)।

(२) मया पुस्तकं पठ्यते (कर्म.)।

(३) मया शय्यते (भाव.)।

(इनका विवेचन अगले पाठों में होगा।)

श्चुत्वसन्धि: (स्तो: श्चुना श्चु:)-

याद रहे-

दन्त्य सकार और तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के अगल बगल यदि

तालव्य शकार और चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) हों तो स् को श् और तवर्ग को चवर्ग होता है।

जैसे-स् त् थ् द् ध् न् के स्थानमें

क्रमश: श् च् छ् ज् झ् ञ् हो जाते हैं।

उदाहरण-

रामस् + शेते	=	रामश्शेते (स् को श् हुआ)
रामस् + चिनोति	=	रामश्चिनोति (स् को श् हुआ)
सत् + चित्	=	सच्चित् (त् को च् हुआ)
शार्ङ्गिन् + जय	=	शार्ङ्गिञ्जय (न् को ञ्)
सद् + जन:	=	सज्जन: (द् को ज्)

* निम्न श्लोक को ठीक से याद करें-

संज्ञा च परिभाषा च विधि: नियम एव च।

अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम् ।।

* पाणिनीय व्याकरण के सूत्र छ: प्रकार के होते हैं-

(१) संज्ञा। (२) परिभाषा। (३) विधि:। (४) नियम:। (५) अतिदेश: (६) अधिकार:।

ध्येयम्

केवलं पठनं पर्याप्तं न भवति, अपितु आचरणं महत्त्वपूर्णम्, अत: स्वल्पं पठन्तु अधिकम् आचरन्तु।

निम्न श्लोकों को याद करें-

उन्नतिकामेन के त्याज्या: ?

षड्दोषा पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।

निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता।।

क: विद्याम् अधिगच्छति?

यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति।

एवं गुरुगतां विद्यां सुश्रूषुरधिगच्छति।।

***

दशमपाठः

निम्नलिखित आत्मनेपदरूपों को ठीक से याद करें-

सेव् लोट् (आज्ञा/प्रार्थना)-

सेवतां	सेवेतां	सेवन्ताम्
सेवस्व	सेवेथां	सेवध्वम्
सेवै	सेवावहै	सेवामहै

प्रयोग-

सः गुरुं सेवताम्, तौ गुरुं सेवेताम्, ते गुरुं सेवन्ताम्, त्वं गुरुं सेवस्व, युवां गुरुं सेवेथाम्, यूयं गुरुं सेवध्वम्, अहं गुरुं सेवै, आवां गुरुं सेवावहै, वयं गुरुं सेवामहै।

कर्तृवाच्यम्-

कर्तृवाच्य में लिखते वा बोलते समय निम्न बातों का ख्याल होना चाहिए-

(१) कर्ता में प्रथमा विभक्ति।

(२) कर्म में द्वितीया विभक्ति।

(३) क्रिया कर्ता के अनुसार होती है।

उदाहरणम्-

रामः	पाठं	पठति
(कर्ता)	(कर्म)	(क्रिया)

उपर्युक्त वाक्य में **रामः** प्रथमा है, **पाठं** द्वितीया है, एवं पठति रामः के अनुसार आया है, क्योंकि रामः प्रथम पुरुष एक वचन है इसलिए उसके साथ प्रथम पुरुष एक वचन ही होगा।

* याद रहे-कर्तृवाच्य में कर्ता बदलने पर क्रिया भी बदलती है।

जैसे-

प्रथम पुरुष	रामः	पाठं	पठति	***मध्यम पुरुषः***	त्वं	पाठं पठसि
	रामौ	पाठं	पठतः		युवां	पाठं पठथः
	रामाः	पाठं	पठन्ति		यूयं	पाठं पठथ

उत्तम	अहं	पाठं	पठामि
पुरुष	आवां	पाठं	पठावः
	वयं	पाठं	पठामः

इस श्लोक को अवश्य याद करें-

कर्तरि प्रत्यये जाते प्रथमा कर्तृकारके
द्वितीयान्तं च कर्म स्यात् कर्त्रधीनं क्रियापदम्।

निम्न रूपों को ठीक से कण्ठस्थ करें-

असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
असेवे	असेवावहि	असेवामहि

प्रयोगः-

सः गुरुम् असेवत, तौ गुरुम् असेवेताम्, ते गुरुम् असेवन्त
त्वं गुरुम् असेवथाः, युवां गुरुम् असेवेथाम्, यूयं गुरुम् असेवध्वम्
अहं गुरुम् असेवे, आवां गुरुं असेवावहि, वयं गुरुम् असेवामहि।

कर्मवाच्यम्-

* कर्मवाच्य में लिखते या बोलते समय निम्न बातों का ख्याल रखना चाहिये-

(१) कर्ता में हमेशा तृतीया विभक्ति।
(२) कर्म में हमेशा प्रथमा विभक्ति।
(३) क्रिया हमेशा कर्म के अनुसार।

जैसे-	रामेण	पाठः	पठ्यते।
	(कर्ता)	(कर्म)	(क्रिया)

याद रहे-कर्तृवाच्य में 'कर्ता' मुख्य होता है और 'कर्मवाच्य' में 'कर्म' मुख्य होता है। कर्तृवाच्य में कर्ता बदलने पर क्रिया बदलती थी, पर कर्मवाच्य में 'कर्म' बदलने पर क्रिया बदलेगी।

उदाहरणम्-

रामेण पाठः पठ्यते। रामेण पाठौ पठ्येते। रामेण पाठाः पठ्यन्ते।
त्वया पाठः पठ्यते। त्वया पाठौ पठ्येते। त्वया पाठाः पठ्यन्ते।

मया पाठः पठ्यते। आवाभ्यां पाठौ पठ्येते। अस्माभिः पाठाः पठ्यन्ते।

इसे स्मरण रखें-

कर्मणि प्रत्यये जाते तृतीया कर्तृकारके।

प्रथमान्तं च कर्म स्यात् कर्माधीनं क्रियापदम्।

निम्न परिवर्तनों को ठीक से समझें-

कर्तृवाच्यम्	**कर्मवाच्यम्**
सः (सः पठति)	तेन (तेन पठ्यते)
त्वम् (त्वं पठसि)	त्वया (त्वया पठ्यते)
अहम् (अहं पठामि)	मया (मया पठ्यते)
रामः (रामः पठति)	रामेण (रामेण पठ्यते)
छात्रः (छात्रः पठति)	छात्रेण (छात्रेण पठ्यते)

निम्न श्लोकों को याद करें-

कस्य नाशो भवति?

सर्वे यत्र विनेतारः सर्वे पण्डितमानिनः।

सर्वे महत्त्वम् इच्छन्ति तद् वृन्दम् अवसीदति।।

विदुषः मूढस्य च लक्षणम्-

सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम्,

अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।

विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वम्

जल्पन्ति मूढास्तु गुणैर्विहीनाः।।

***

एकादशपाठः

निम्न रूपों को ठीक से समझें-

सेव् विधिलिङ् (चाहिए/प्रार्थना)

सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

प्रयोगः-

सः गुरुं सेवेत, तौ गुरुं सेवेयाताम्, ते गुरुं सेवेरन्
त्वं गुरुं सेवेथाः, युवां गुरुं सेवेयाथाम्, यूयं गुरुं सेवेध्वम्
अहं गुरुं सेवेय, आवां गुरुं सेवेवहि, वयं गुरुं सेवेमहि

सेव् लृट् (भविष्यत् कालः)-

सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

प्रयोगः-

सः गुरुं सेविष्यते	तौ गुरुं सेविष्येते	ते गुरुं सेविष्यन्ते।
त्वं गुरुं सेविष्यसे	युवां गुरुं सेविष्येथे	यूयं गुरुं सेविष्यध्वे।
अहं गुरुं सेविष्ये	आवां गुरुं सेविष्यावहे	वयं गुरुं सेविष्यामहे।

भाववाच्यम्-

भाववाच्य में बोलते या लिखते समय निम्न बातों का ख्याल रखना चाहिए-

कर्ता में=तृतीया विभक्ति।

कर्म=नहीं होता है।

क्रिया में=प्रथम पुरुष एकवचन मात्र होता है।

सकर्मकः-

जिस वाक्य में क्या? ऐसे पूछने पर यदि उत्तर मिले तो समझना चाहिए कि धातु या क्रिया सकर्मक (कर्म से युक्त) है।

जैसे किसी ने कहा किं 'खादति' इसमें प्रश्न हुआ कि किं खादति? उत्तर आयेगा 'फलं खादति' इससे सिद्ध हुआ कि यह वाक्य सकर्मक है।

इसी प्रकार-

किं पठति?= पुस्तकम् ।

किं लिखति?=पत्रम् ।

किं पश्यति?= चित्रम् ।

किं पिबति?= जलम् ।

(ये सभी सकर्मक हुये)

अकर्मकः-

जहाँ किं लगाकर पूछने पर उत्तर न निकले वह अकर्मक होता है। जैसे 'बालकः शेते' बालक सोता है। यहाँ पर क्या की जिज्ञासा ही नहीं है। अतः यह अर्थात् शीङ् धातु अकर्मक हुआ।

निम्न अर्थवाले धातु अकर्मक होते हैं-

श्लोक कण्ठस्थ करें-

लज्जा-सत्ता-स्थिति-जागरणम्, वृद्धिः क्षय-भय-जीवित-मरणम्।
शयन - क्रीडा - रुचि - दीप्त्यर्थं, धातुगणन्तमकर्मकमाहुः।।

निम्न संख्याओं को ठीक से स्मरण करें-

एकम्	नव	सप्तदश	पञ्चविंशतिः	त्रयस्त्रिंशत्
द्वे	दश	अष्टादश	षड्विंशतिः	चतुस्त्रिंशत्
त्रीणि	एकादश	एकोनविंशतिः	सप्तविंशतिः	पञ्चत्रिंशत्
चत्वारि	द्वादश	विंशतिः	अष्टाविंशतिः	षट्त्रिंशत्
पञ्च	त्रयोदश	एकविंशतिः	एकोनत्रिंशत्	सप्तत्रिंशत्
षट्	चतुर्दश	द्वाविंशतिः	त्रिंशत्	अष्टत्रिंशत्
सप्त	पञ्चदश	त्रयोविंशतिः	एकत्रिंशत्	एकोनचत्वारिंशत्
अष्ट	षोडश	चतुर्विंशतिः	द्वात्रिंशत्	चत्वारिंशत्

प्रत्ययः-

(१) **क्त प्रत्यय**-भूतकाल अर्थ में धातु से क्त प्रत्यय होगा। क्त में से मात्र त शेष रहता है। सेट् (इ लगने वाले) धातु में इ लगेगा तथा अनिट् (इ न लगने वाले) धातु में इ नहीं लगेगा।

जैसे- पठ् + क्त = पठितः (पठ् + इतः = पठितः) सेट्
लिख् + क्त = लिखितः (लिख् + इतः = लिखितः) सेट्
खाद् +क्त = खादितः (खाद्+इतः=खादितः) सेट्
गम्+क्त=गतः (म् का लोप) अनिट्
पा+क्त=पीतः (आ को ई हुआ है) अनिट्
इनका अर्थ क्रमशः पढ़ा, लिखा, खाया, गया, पीया है।

* यह स्मरण रहे कि क्त प्रत्यय से बने शब्दों का तीनों लिङ्गों में रूप चलता है।

जैसे- पुंल्लिङ्ग में-पठितः	पठितौ	पठिताः (बालकवत्)
स्त्रीलिङ्ग में-पठिता	पठिते	पठिताः (रमावत्)
नपुंसकलिङ्ग में-पठितम्	पठिते	पठितानि (फलवत्)

ध्यातव्यः-क्त प्रत्यय लगाकर बोलते या लिखते समय निम्न बातों का ख्याल रखना चाहिए-

कर्ता में=तृतीया विभक्ति
कर्म में=प्रथमा विभक्ति	**(अर्थात् इनमें**
क्रिया=कर्म के अनुसार	**कर्म वाच्य होगा।)**

प्रयोगः-तेन/त्वया/मया-ग्रन्थः पठितः, ग्रन्थौ पठितौ, ग्रन्थाः पठिताः।
त्वया/रामेण/कृष्णेन-पत्रिका पठिता, पत्रिके पठिते, पत्रिकाः पठिताः।
मया/सीतया/गुरुणा-पुस्तकं पठितं, पुस्तके पठिते, पुस्तकानि पठितानि।

ध्यान से समझने की चेष्टा करें-

यत् लिङ्गं यत् वचनं या च विभक्तिः विशेष्यस्य
तत् लिङ्गं तत् वचनं सा च विभक्तिः विशेषणस्यापि।

अर्थात्-विशेष्य में जो लिङ्ग, जो वचन और जो विभक्ति होती है, विशेषण में भी वही लिङ्ग, वही वचन और वही विभक्ति होती है।

जैसे- नीलं गगनम्। गगनं नपुंसक लिङ्ग है नीलं भी नपुंसक हुआ।
सुन्दरः बालकः। बालकः पुंल्लिङ्ग है अतः सुन्दरः भी पुं. हुआ।
सुन्दरी बालिका। बालिका स्त्री. है अतः सुन्दरी भी स्त्रीलिङ्ग हुआ।

***

द्वादशपाठः

निम्न संख्याओं को याद करें-

एकचत्वारिंशत्	एकपञ्चाशत्	एकषष्टिः
द्विचत्वारिंशत्	द्विपञ्चाशत्	द्विषष्टिः
त्रिचत्वारिंशत्	त्रिपञ्चाशत्	त्रिषष्टिः
चतुश्चत्वारिंशत्	चतुःपञ्चाशत्	चतुःषष्टिः
पञ्चचत्वारिंशत्	पञ्चपञ्चाशत्	पञ्चषष्टिः
षट्चत्वारिंशत्	षट्पञ्चाशत्	षट्षष्टिः
सप्तचत्वारिंशत्	सप्तपञ्चाशत्	सप्तषष्टिः
अष्टचत्वारिंशत्	अष्टपञ्चाशत्	अष्टषष्टिः
एकोनपञ्चाशत्	एकोनषष्टिः	एकोनसप्ततिः
पञ्चाशत्	षष्टिः	सप्ततिः

प्रत्ययः-

क्तवतु प्रत्ययः-भूतकाल के अर्थ में ही धातु से क्तवतु प्रत्यय भी होता है। क्तवतु में मात्र तवत् शेष रहता है। इसमें सेट् धातु में इ जुड़ेगा और अनिट् में नहीं।

जैसे-

पठ्+क्तवतु=पठितवान् (पठ्+इ+तवत्-पुल्लिङ्ग)

पठ्+क्तवतु=पठितवती (पठ्+इ+तवत्-स्त्रीलिङ्ग)

पठ्+क्तवतु=पठितवत् (पठ्+इ+तवत्=नपुंसकलिङ्ग)

आसान तरीका-

पहले पाठ में आ चुके क्त प्रत्यय से बने शब्द के अन्त में पुंल्लिङ्ग में 'वान्' स्त्रीलिङ्ग में 'वती' तथा नपुंसकलिङ्ग में 'वत्' जोड़ देने से क्तवतु प्रत्यय का रूप बन जाता है।

जैसे-पठ्+क्त=पठितः में वान् जोड़ने पर=पठितवान्, 'वती' जोड़ने पर पठितवती तथा 'वत्' जोड़ने पर पठितवत् बनेगा।

ध्यातव्य-

* क्तवतु प्रत्यय लगाकर बोलते या लिखते समय निम्न बातों का ख्याल रखना चाहिए-

कर्ता में प्रथमा विभक्ति
कर्म में द्वितीया विभक्ति **(अर्थात् इसमें**
क्रिया कर्ता के अनुसार **कर्तृवाच्य होगा।)**

प्रयोगः- सः/त्वम्/अहं-पुस्तकं पठितवान् ।
रामः/कृष्णः/केशवः-पुस्तकं पठितवान्।
सीता/गीता/बालिका-पुस्तकं पठितवती।

इसी प्रकार-गतवान्, खादितवान्, लिखितवान्, आगतवान्, कथितवान्, श्रुतवान्, दृष्टवान्, ज्ञातवान्, आदि का भी उपर्युक्त प्रयोग के आधार पर उच्चारण करें।

याद रखें-सः बालकः, सा बालिका, तत् पुस्तकम्, सुन्दरः बालकः, सुन्दरं पुस्तकम्, सुन्दरी कन्या, तस्मिन् गृहे, तस्य छात्रस्य (देखें ११वाँ पाठ)।

* ***संख्या शब्दों को पूर्ववत् स्मरण करें-***

एकसप्ततिः	एकाशीतिः	एकनवतिः
द्विसप्ततिः	द्वयशीतिः	द्विनवतिः
त्रिसप्ततिः	त्र्यशीतिः	त्रिनवतिः
चतुःसप्ततिः	चतुरशीतिः	चतुर्नवतिः
पञ्चसप्ततिः	पञ्चाशीतिः	पञ्चनवतिः
षट्सप्ततिः	षडशीतिः	षण्णवतिः
सप्तसप्ततिः	सप्ताशीतिः	सप्तनवतिः
अष्टसप्ततिः	अष्टाशीतिः	अष्टनवतिः
एकोनाशीतिः	एकोननवतिः	एकोनशतम्
अशीतिः	नवतिः	शतम्

इकाई, दहाई आदि के लिए निम्न श्लोकों को स्मरण करें-

एकं दश शतं चैव सहस्रम् अयुतं तथा।
लक्षं च नियुतं चैव कोटिः अर्बुदम् एव च॥१॥

बृन्दं खर्वः निखर्वश्च महापद्मश्च सागरः।
अन्त्यं मध्यं परार्द्धश्च दशवृद्ध्या यथाक्रमम् ॥२॥

शब्दरूप-धेनुः (गाय) उकारान्त स्त्रीलिङ्ग

धेनुः	धेनू	धेनवः	प्र.
धेनुम्	धेनू	धेनूः	द्वि.
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः	तृ.
धेन्वै/धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः	च.
धेन्वाः/धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः	पं.
धेन्वाः/धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्	ष.
धेन्वाम्/धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु	स.
हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः !	सम्बो.

निम्न अशुद्धियों पर ध्यान दें-

अशुद्धि (गलत)	शुद्ध (सही)
(१) किं समाचारम्	(१) कः समाचारः/कः वृत्तान्तः
(२) कुशलम् अस्मि	(२) कुशलः अस्मि/कुशला अस्मि (स्त्री.)
(३) अहम् नाम	(३) मम नाम।
(४) गृहे गच्छामि	(४) गृहं गच्छामि।
(५) कन्दुकं क्रीडामि	(५) कन्दुकेन क्रीडामि।
(६) सुष्ठुम् अस्ति	(६) सुष्ठु अस्ति।

इसे भी याद करें-

उद्धरेद् आत्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

अर्थः-अपने से अपने को ऊपर उठाने का यत्न करना चाहिए, अपने से अपने को नीचे नहीं गिराना चाहिए, क्योंकि मनुष्य स्वयं अपना मित्र भी है तथा शत्रु भी है।

***

त्रयोदशपाठः

निम्न दिनों के नामों को ठीक से पढ़ें-

रविवार: (Sunday) सोमवार: (Monday) मङ्गलवार: (Tuesday)
बुधवार: (Wednesday) गुरुवार: (Thursday) शुक्रवार: (Friday)
शनिवार: (Saturday)

प्रयोग: -

(१) ह्य: रविवार: आसीत् = कल रविवार था।

It was Sunday yesterday.

(२) अद्य सोमवार: अस्ति = आज सोमवार है।

It is Monday today.

(३) श्व: मङ्गलवार: भविष्यति = कल मङ्गलवार होगा।

It will be Tuesday tomorrow.

प्र. अद्य क: वार: अस्ति=आज कौन दिन है?
What is the day today?

उ. अद्य रविवार: अस्ति=आज रविवार है।
It is Sunday today.

प्र. ह्य: क: वार: आसीत्=कल कौन दिन था?
What day was Yesterday?

उ. ह्य: शनिवार: आसीत्=कल शनिवार था।
It was Saturday yesterday.

प्र. श्व: क: वार: भविष्यति=कल कौन दिन होगा?
What day will be tomorrow?

उ. श्व: सोमवार: भविष्यति=कल सोमवार होगा।
It will be Monday tomorrow.

निम्नोक्त तिथियों के नामों को शुद्धतापूर्वक याद करें-

प्रतिपद्	चतुर्थी	सप्तमी	दशमी	त्रयोदशी
द्वितीया	पञ्चमी	अष्टमी	एकादशी	चतुर्दशी
तृतीया	षष्ठी	नवमी	द्वादशी	पूर्णिमा या अमावस्या

क्त्वा प्रत्यय-

करके (अर्थात् खाकर के, पीकर के पढ़ करके इत्यादि) अर्थ को बताने के लिए धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है। क्त्वा में केवल त्वा शेष रहता है। यह अव्यय होता है। अतः इसके रूप नहीं चलते हैं।

जैसे-धातु, प्रत्यय से निष्पन्न रूप अर्थ

पठ्+क्त्वा=पठित्वा=पढ़कर	After Reading.
कृ+क्त्वा=कृत्वा=करके	After Doing.
लिख्+क्त्वा=लिखित्वा=लिखकर	After Writing.
गम्+क्त्वा=गत्वा=जाकर	After Going.
हन्+क्त्वा=हत्वा=मारकर	After Killing.
नम्+क्त्वा=नत्वा=नमस्कार कर के	After Saluting.
दा+क्त्वा=दत्वा=दे कर	After Giving.
ज्ञा+क्त्वा=ज्ञात्वा=जान कर	After Knowing.
ब्रू+क्त्वा=उक्त्वा=कह कर	After Telling.
स्वप्+क्त्वा=सुप्त्वा=सो कर	After Sleeping.
ग्रह्+क्त्वा=गृहीत्वा=लेकर	After Taking.
प्रच्छ्+क्त्वा=पृष्ट्वा=पूछ कर	After Asking.
वस्+क्त्वा=उषित्वा=रह कर	After Staying.

प्रयोगः-

रामः पाठं पठित्वा, लेखं लिखित्वा, गुरुं च नत्वा गृहं गच्छतिः=राम पाठ. पढ़कर, लेख लिखकर और गुरु को प्रणाम कर घर जाता है।

After reading lessons, writing article and saluting the teacher, Ram goes to his house.

कारक-

कारक के नाम और अर्थ प्रथम पाठ में ही दिये गये हैं। अब किन-किन जगहों पर कौन-कौन सी विभक्तियाँ होंगी, उसे समझाया जायेगा।

प्रथमा-

कर्ता (करने वाला) तथा व्यक्तिनाम, वस्तुनाम आदि में प्रथमा होती है।

जैसे-

'रामः पुस्तकं पठति' में राम कर्ता है, अतः उसमें प्रथमा विभक्ति हुई। इसी प्रकार-रामः, कृष्णः, केशवः आदि मात्र नामोच्चारण में प्रथमा होती है। इसी प्रकार वस्तुओं के नाम के सम्बन्ध में भी समझना चाहिए। यथा-पुस्तकं, पत्रं, छत्रं, मित्रं, पात्रं, गात्रम् आदि।

प्रयोगः-

(१) रामः कार्यं करोति। (२) अहं कार्यं करोमि। (३) त्वं पठसि। (४) सा गृहं गच्छति। (५) ते गच्छन्ति। (६) गुरुः गच्छति। (७) पिता आगच्छति। (८) पशुः चरति। (९) शिशुः रोदनं करोति। (१०) वायुः वहति।

द्वितीया-

कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे-

छात्रः संस्कृतं पठति। रामः विद्यालयं गच्छति, अहं ग्रामं गच्छामि।

निम्न शब्दों के साथ द्वितीया विभक्ति होती है-

अभितः=दोनों ओर उभयतः=दोनों ओर

परितः=चारों ओर सर्वतः=सब ओर

प्रति=ओर धिक् = धिक्कार विना=विना

प्रयोगः-

ग्रामम् अभितः नदी अस्ति=गाँव के दोनों ओर नदी है।

both side of the in village are rivers.

नगरम् उभयतः राजमार्गः अस्ति=नगर के दोनों ओर राजमार्ग है।

both side of the in city are Highways.

विद्यालयं परितः पुष्पाणि सन्ति=विद्यालय के चारों ओर फूल हैं।

School is surrounded by flowers.

रामः गृहं प्रति गच्छति=राम घर की ओर जाता है।

Ram goes towards house.

धिक् मूर्खम्=मूर्ख को धिक्कार है।

Alas ! is fool.

धनं विना न धर्मः=धन के बिना धर्म नहीं।

There is no Dharma (good deed) without wealth.

सूचना-

निम्नोक्त शुद्ध एवं अशुद्ध वाक्यों को ध्यान से देख कर अशुद्धि कम करें-

अशुद्धवाक्यानि	शुद्धवाक्यानि
(१) रामः ग्रामे गच्छति।	(१) रामः ग्रामं गच्छति।
(२) बालकौ विद्यालयः गच्छन्ति।	(२) बालकौ विद्यालयं गच्छतः।
(३) तौ पठति।	(३) तौ पठतः।
(४) त्वं राज्यस्य रक्षसि।	(४) त्वं राज्यं रक्षसि।
(५) युवां पुस्तकं पठसि।	(५) युवां पुस्तकं पठथः।
(६) यूयं हसन्ति।	(६) यूयं हसथ।
(७) भवान् आगच्छसि	(७) भवान् आगच्छति।
(८) त्वं नाम किम्?	(८) तव नाम किम्?
(९) अहं नाम गोविन्दः।	(९) मम नाम गोविन्दः।
(१०) अहं त्वां ददामि।	(१०) अहं तुभ्यं ददामि।
(११) ते दानं ददन्ति।	(११) ते दानं ददति।
(१२) छात्राः प्रातःकाले जाग्रन्ति।	(१२) छात्राः प्रातः काले जाग्रति।

स्मरण करें

बालकः गच्छति ग्रामं बालकौ गच्छतः गृहम्।
बालकाः मन्दिरं यान्ति तत्र देवं नमन्ति च।।

***

चतुर्दशपाठः

निम्न पद्यों को स्मरण करने का यत्न करें-

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च ।
अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट् ।
निर्देशे प्रथमा प्रोक्ता, सैव चामन्त्रणेष्वपि ।
द्वितीया कर्मणि प्रोक्ता तृतीयानुक्तकर्तरि ।

तृतीया-

(१) करण कारक में तृतीया होती है। क्रिया सिद्धि में सहायक को 'करण' कहा जाता है। जैसे-रामः बाणेन बालिं हतवान्, इसमें मारने की क्रिया की सिद्धि में बाण ने सहायता की है, अतः बाण करण हुआ।

इसी प्रकार-

कलमेन लिखति। कुद्दालेन खनति। मुखेन खादति। दण्डेन चलति। नासिकया जिघ्रति। पादेन ताडयति। हस्तेन ताडयति। पादाभ्यां चलति। नेत्रेण पश्यति। खड्गेन कृन्तति। **इस प्रकार के वाक्यों में तृतीया होगी।**

इसी प्रकार कर्मवाच्य, एवं भावचाच्य के कर्ता में भी तृतीया होती है। इसका उल्लेख (१०) एवं (११) पाठों में किया जा चुका है।

कुछ उदाहरण-

(कर्म) रामेण गृहं गम्यते
त्वया कार्यं क्रियते
मया पाठः पठ्यते
सीतया भोजनं पच्यते
गीतया गीतं गीयते

(भाव) - रामेण/त्वया/मया/तेन-शय्यते।

(२) सह, सार्धम्, साकम्, समम् शब्दों के साथ भी तृतीया होगी। जैसे-अहं मित्रेण सह/साकम्/सार्धम्/समम्/गृहं गच्छामि।

(३) प्रयोजन **अर्थ हो तो किम्, किं कार्यम्, कः अर्थः, किं प्रयोजनम्-** इन चारों **के साथ** तृतीया होगी।

यथा-

मूर्खेण पुत्रेण किम्? दुष्टेन मित्रेण किं कार्यम्? बुद्धिहीनेन शिष्येण कः अर्थः? अविश्वस्तेन जनेन किं प्रयोजनम्? इन चारों का अर्थ है-क्या लाभ?

(४) अलम् के साथ तृतीया होती है-

अलं विवादेन=झगड़ा मत करो= Do not quarrel.
अलं कोलाहलेन=हल्ला मत करो= Keep silent.
अलं भोजनेन=भोजन मत करो= Do not take food.
अलं हसितेन=मत हँसो= Do not laugh.

(५) शरीर के अङ्ग में बिकार होने पर विकृत (बिगड़े हुए) अंग में तृतीया होगी-

जैसे-

नेत्रेण काणः=एक आँख से काना= Blind by an eye.
पादेन खञ्जः=पैर से लंगड़ा= Lame by a leg.
कर्णेन बधिरः=कान से बहरा= Deaf by an ear.

चतुर्थी- (१) सम्प्रदान कारक (देना आदि) में चतुर्थी होती है।

जैसे-

ब्राह्मणाय धनं ददाति=ब्राह्मण को धन देता है
Gives money to Brahmin.
बालकाय पुस्तकं ददाति=बालक को पुस्तक देता है।
Gives book to boy/child.
निर्धनाय वस्त्रं देहि=निर्धन को वस्त्र दो।
Give clothes to poors.
अहं तस्मै लेखनीं ददामि=मैं उसको लेखनी देता हूँ।
I give him a pen.
त्वम् अस्मै किं ददासि?=तुम इसे क्या देते हो?
What do you give to him?

* यह ध्यान रहे कि जिसे दिया जाता है उसमें चतुर्थी लगती है।

(२) नमः (नमस्कार) स्वस्ति (आशीर्वाद)

स्वाहा (अग्नि में हवन करना)

स्वधा (पितरों को तर्पण करना)

इनमें चतुर्थी होती है।

जैसे-

गुरवे नमः=गुरुको नमस्कार= Salutation to teacher.

पित्रे नमः=पिता को नमस्कार= Salutation to father.

रामाय नमः=राम को नमस्कार= Salutation to Ram.

पुत्राय स्वस्ति=पुत्र को आशीर्वाद=Blessings to Son.

शिष्याय स्वस्ति=शिष्य को आशीर्वाद=Blessings to Students.

इसी प्रकार आशीर्वाद सूचक शब्द-भद्रं, कुशलं, शम् आदि के साथ भी चतुर्थी ही होगी।

जैसे- शिष्याय स्वस्ति/भद्रं/कुशलं/शम् भूयात्।

(३) रुच् (अच्छा लगना, प्रिय लगना)

अर्थ की धातुओं के साथ चतुर्थी होती है।

जैसे-

शिष्याय मोदकं रोचते=शिष्य को लड्डू अच्छा लगता है।

Student likes Sweet.

बालकाय दुग्धं रोचते=बालक को दूध अच्छा लगता है।

Child likes milk.

वृद्धाय फलं रोचते=वृद्ध को फल अच्छा लगता है।

Old man likes fruits.

तुभ्यं किं रोचते?=तुम्हें क्या अच्छा लगता है?

What do you like?

मह्यं व्यायामः रोचते=मुझे व्यायाम अच्छा लगता है।

I like exercise.

(४) क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह (द्रोह करना) ईर्ष्य (ईर्ष्या करना) असूय

(दोष निकालना) अर्थ की धातुओं के साथ जिस पर क्रोध किया जाय उसमें चतुर्थी होती है।

जैसे-

राम: रावणाय क्रुध्यति=राम रावण पर क्रोध करता है।

Ram **demonstrates anger** to Rawana.

दुर्जन: सज्जनाय द्रुह्यति=दुर्जन सज्जन से द्रोह करता है।

Bad man **quarrels** with gentleman.

मूर्ख: विदुषे ईर्ष्यति=मूर्ख विद्वान् पर ईर्ष्या करता है।

Foolish demonstrates envy to scholar.

शठ: सर्वेभ्य: असूयति=शठ सभी में दोष निकालता है।

Fool findsout faults of all.

(५) कहना, निवेदन करना, उपदिश् (उपदेश करना) धातुओं के साथ चतुर्थी होती है।

जैसे- गुरु: शिष्याय कथयति। शिष्य: गुरवे निवेदयति। पिता पुत्राय उपदिशति।

(६) जिस प्रयोजन (उद्देश्य) के लिए जो वस्तु अथवा क्रिया होती है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे-

धर्माय दानं करोति=धर्म के लिए दान करता है।

Donates for Dharma.

मोक्षाय ईश्वरं नमति=मोक्ष के लिए ईश्वर को नमस्कार करता है।

Salutes God for salvation.

बालक: दुग्धाय क्रन्दति=बालक दूध के लिए रोता है।

Child weeps for milk.

अहं ज्ञानाय पुस्तकं पठामि=मैं ज्ञान के लिए पुस्तक पढ़ता हूँ।

I study books for knowledge.

(७) चतुर्थी के अर्थ में ही 'कृते' और 'अर्थम्' अव्ययों का प्रयोग होता है। 'कृते' के साथ में षष्ठी होती है।

ध्यान से समझने का यत्न करें-

भोजनाय-भोजनार्थम्-भोजनस्य कृते-भोजन के लिए।

For food.

पठनाय-पठनार्थम्-पठनस्य कृते-पढ़ने के लिए।

For study.

श्रवणाय-श्रवणार्थम्-श्रवणस्य कृते-सुनने के लिए।

To listen.

धर्माय-धर्मार्थम्-धर्मस्य कृते-धर्म के लिए।

For Dharma.

प्रयोगः-

रामः भोजनाय गृहं गच्छति। रामः भोजनार्थं गृहं गच्छति। रामः भोजनस्य कृते गृहं गच्छति (राम भोजन के लिए घर जाता है)।

Ram goes to his house for food.

* इसी प्रकार सः, त्वम्, अहम्, यूयं, वयम्, आदि जोड़ कर सैकड़ों वाक्य बनाये जा सकते हैं।

संकल्प करें-

(१) अहं सर्वदा संस्कृतं वदिष्यामि।
(२) संस्कृतं मम सर्वस्वम् अस्ति।
(३) अहं पत्राणि संस्कृतभाषया लेखिष्यामि।
(४) गृहे संस्कृतं वदिष्यामि।
(५) संस्कृतं मम कर्मभाषा अस्ति।
(६) संस्कृतं मम धर्मभाषा अस्ति।
(७) संस्कृतं विना ज्ञानम् अपूर्णम् अस्ति।
(८) अत एव अहं संस्कृतं पठामि।
(९) संस्कृतं कठिनं नास्ति।
(१०) संस्कृतम् अति सरलम् अस्ति।

अत एवोच्यते-

जानाति विविधाः भाषाः जानाति विविधाः कलाः ।
आत्मानं नैव जानाति यो न जानाति संस्कृतम् ।।
विज्ञानं वेदसाहित्यं दर्शनं सार्वदेशिकम् ।
अन्तरा संस्कृतज्ञानं परिपूर्णं न जायते ।।

***

पञ्चदशपाठः

पञ्चमी-

(१) सामान्यतः अपादान कारक में पञ्चमी होती है। अपादान का तात्पर्य कहीं से अलग होना है।

जैसे-

(१) वृक्षात् पत्रं पतति=पेड़ से पत्ता गिरता है।
Leaf falls down from the tree.

(२) अश्वात् मनुष्यः पतति=घोड़े से आदमी गिरता है।
Man falls down from riding horse.

(३) पर्वतात् प्रस्तरखण्डः पतति=पर्वत से पत्थर का टुकड़ा गिरता है।
A piece of a stone falls down from the hill.

(४) आकाशात् जलं पतति=आकाश से पानी गिरता है।
It rains from the sky.

(५) प्रासादात् बालकः अपतत्=महल से बालक गिरा।
A child fell down from the palace.

(६) यानात् वस्तु अपतत्=गाड़ी से सामान गिरा
goods fell down from the vehicle.

२. भय (डर) और रक्षा अर्थ की धातुओं के साथ भय के कारण में पञ्चमी होती है।

जैसे-

(१) बालकः वानरात् बिभेति=बालक वानर से डरता है।
Child fears from the monkey.

(२) धनिकः चोराद् बिभेति=धनी चोर से डरता है।
Rich man fears from the thief.

(३) राजा बालकं चोराद् रक्षति=राजा बालक चोर से बचाता है।
King saves a child from the thief.

(४) गौः सिंहात् बिभेति=गाय सिंह से डरती है।
Cow is afraid of lion.

(५) मनुष्यः मनुष्यात् बिभेति=मनुष्य मनुष्य से डरता है।
Man is afraid of man.

(६) सिंहः मनुष्यात् भयं करोति=सिंह मनुष्य से डरता है।
Lion is afraid of man.

३. जिससे पढ़ा जाय तथा जहाँ से किसी वस्तु को हटाया जाय उसमें पञ्चमी होती है।

जैसे-

(१) छात्रः गुरोः विद्यां पठति=छात्र गुरु से विद्या पढ़ता है।
Student study knowledge from the teacher.

(२) अहम् उपाध्यायात् संस्कृतं पठामि=मैं गुरु से संस्कृत पढ़ता हूँ।
I study Sanskrit with teacher.

(३) गोपालः क्षेत्रात् पशुं निवारयति=गोपाल खेत से पशु को हटाता है।
Gopal drives away the animals from the field.

(४) पिता पुत्रं दुर्गुणात् वारयति=पिता पुत्र को दुर्गुण से रोकता है।
Father stops son from bad habits.

(४) उद्भवति, प्रभवति, जायते (उत्पन्न होना) आदि के साथ पञ्चमी होती है।

प्रयोगः -

प्रजापतेः संसारः जायते=प्रजापति से संसार उत्पन्न होता है।
World is creation of God.

हिमालयात् गङ्गा प्रभवति=हिमालय से गङ्गा निकलती है।
The Ganga flows from the Himalaya.

बीजेभ्यः अङ्कुराः जायन्ते=बीजों से अङ्कुर उत्पन्न होते हैं।
Tissues are creation of seeds.

भार्यायाः पुत्रः जायते=पत्नी से पुत्र उत्पन्न होता है।
Wife delivers a son.

भूमेः जलम् उद्भवति=जमीन से जल निकलता है।

Water comes out from the land.

५. निलीयते (छिपता है) बिभेति (डरता है) तथा त्रायते (रक्षा करता है) के साथ में पञ्चमी होती है।

प्रयोगः -

नृपात् चोरः निलीयते=राजा से चोर छिपता है।

Thief hides self from the king.

सज्जनात् दुर्जनः निलीयते=सज्जन से दुर्जन छिपता है।

Badman hides self from the gentleman.

बालकः सिंहात् बिभेति=बालक सिंह से डरता है।

Child fears from the lion.

पिता पुत्रं चोरात् त्रायते=पिता पुत्र को चोर से रक्षा करता है।

Father saves his son from the thief.

सत्यात् असत्यं बिभेति=सत्य से असत्य डरता है।

Untruth is afraid of truth.

६. जहाँ पर किसी से तुलना की जाती है, उसमें (जिससे तुलना की जाय) पञ्चमी होता है।

प्रयोगः -

रामात् श्यामः पटुतरः=राम से श्याम चालाक है।

Shyama is clever than Rama.

धनात् ज्ञानं श्रेष्ठतरम्=धन से ज्ञान श्रेष्ठ है।

Knowledge is better than property/money.

दुर्जनात् सज्जनः गुरुतरः=दुर्जन से सज्जन बड़ा है।

Gentleman is great/greater than badman.

पापात् पण्यं गुरुतरम्=पाप से पुण्य बड़ा है।

Virtue is greater than vice.

पराधीनात् स्वाधीनः शुभतरः=पराधीन से स्वाधीन अच्छा है।

Independency is better than dependency.

निम्न भेदों को ध्यान से समझें-

हरति= ले जाता है= **Takes away.**

प्रहरति=	मारता है=	Beats.
आहरति=	ले आता है=	Brings.
संहरति=	नाश करता है=	Spoils.
विहरति=	घूमता है=	Rounds.
परिहरति=	हटाता है=	Takes away.
व्यवहरति=	व्यवहार करता है=	Behaves.
उपहरति=	भेंट देता है=	Presents.
अपहरति=	चुराता है=	Steels.
उद्धरति=	बचाता है=	Saves.

दुर्जनेन सख्यं वैरञ्च हानिकरे-

दुर्जनेन समं वैरं सख्यञ्चापि न कारयेत्।
उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्।।

गुणरहिताधिकपुत्रैः लाभो नास्ति-

एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम्।
सहैव दशभिः पुत्रैः भारं वहति गर्धभी।।

मम बान्धवाः के?

सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राताः दया सखा।
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः।।

कथं जनः सुखी जायते?

एकया द्वे विनिश्चित्य त्रीन् चतुर्भिः वशीकुरु।
पञ्च जित्वा विदित्वा षट् सप्त हित्वा सुखी भव।।

अस्यार्थः-**(१) बुद्धि (२) शुभाशुभे (३) शत्रु-मित्र-समाः (४) साम-दण्ड-भेदाः (५) पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि (६) षड्दर्शनादि (७) काम-क्रोध-लोभ-मोह-दंभ-पाखण्ड-ईर्श्याः।**

***

षोडषपाठः

षष्ठी-

(१) सम्बन्ध कारक में षष्ठी विभक्ति होती है।

प्रयोगः -

छात्रस्य पुस्तकम् = छात्र की पुस्तक=	Student's book.
वृक्षस्य पत्रम्=पेड़ का पत्ता=	Leaf of a tree.
आम्रस्य फलम्=आम का फल=	Mango's fruits.
गङ्गाया: जलम्=गङ्गा का जल=	Water of the Ganga.
देवदत्तस्य गृहम्=देवदत्त का घर=	House of Dewadatta.
पुस्तकस्य पत्रम्=पुस्तक का पन्ना=	Page of a book.
धेनो: दुग्धम्=गाय का दूध=	Milk of a cow.
बुद्धस्य धर्म:=बुद्ध का धर्म=	Dharma of Budha.

(2) हेतु (कारण) शब्द के साथ एवं स्मरण अर्थ की धातुओं के साथ (खेदपूर्वक स्मरण में) कर्म में षष्ठी होती है।

प्रयोगः -

त्वं कस्य हेतो: पठसि? तुम किसके लिए पढ़ते हो?

For what purpose you study?

अहं धनस्य हेतो: पठामि=मैं धन के लिए पढ़ता हूँ।

I study for money.

राम: ज्ञानस्य हेतो: पठति=राम ज्ञान के लिए पढ़ता है।

Ram studies for knowledge.

बालक: मातु: स्मरति=बालक (खेदपूर्वक) माँ को स्मरण करता है।

Child remembers his mother with sorrow.

पुत्र: पितु: स्मरति=पुत्र पिता को (खेद के साथ) स्मरण करता है।

Son remembers his father with sorrow.

(३) उपरि (ऊपर), अध: नीचै: (नीचे) पुर: (सामने) पश्चात् (पीछे) अग्रे (आगे) अग्रत: (आगे) इन शब्दों के साथ षष्ठी होती है।

प्रयोगः-

गृहस्य उपरि, गृहस्य नीचैः, विद्यालयस्य पुरः, गृहस्य अग्रे वा पक्षिणः सन्ति।

(४) बहुतों में से एक को अलग करने में जहाँ से अलग किया जाय उसमें षष्ठी एवं सप्तमी होती है।

प्रयोगः-

कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः=कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।
Kalidas is best among the poets.
छात्राणां छात्रेषु वा मोहनः पटुतमः=छात्रों में मोहन सबसे चालाक है।
Mohan is most clever among the students.
नीतिज्ञानां नीतिज्ञेषु वा चाणक्यः श्रेष्ठः=नीतिज्ञों में चाणक्य श्रेष्ठ है।
Chanakya is best among the politicians.
वैद्यानां वैद्येषु वा सुश्रुतः गुरुतमः=वैद्यों में सुश्रुत बड़े हैं।
Sushrut is greatest among the Doctors.
राष्ट्रभक्तेषु महात्मा गान्धी श्रेष्ठः=राष्ट्रभक्तों में महात्मा गाँधी श्रेष्ठ हैं।
Mahatma Gandhi is best among the patriots.

याद करें-

बालकस्य प्रियं दुग्धं प्रिये बालकयोः फले।
मनोहराणि चित्राणि बालकानां प्रियाणि च।।

सूचना-

पूर्व पाठों में आये हुए सन्धियों का पुनः अनुशीलन कीजिए।

दीर्घसन्धिः (अकः सवर्णे दीर्घः)-

नियम-

अ इ उ ऋ के बाद समान अक्षर बाद में हों अर्थात् अ+अ, अ+आ, आ+अ, आ+आ (इसी प्रकार इ उ ऋ में भी) हों तो दोनों के स्थान पर उसी अक्षर का दीर्घ अक्षर हो जाता है।

प्रयोगः-

विद्या+आलयः=विद्यालयः। धन+आलयः=धनालयः। औषध+आलयः=

औषधालयः। गिरि+ईशः=गिरीशः। मुनि+ईशः=मुनीशः। गुरु+उवाच=गुरूवाच। विष्णु+उवाच=विष्णूवाच। होतृ+ऋकारः=होतॄकारः। पितृ+ऋकारः=पितॄकारः।

उपसर्गप्रयोगः-

क्रामति=चलता है= Goes.
प्रक्रमते=आरम्भ करता है= Starts.
संक्रामति=संक्रान्त होता है= Transits.
विक्रमते=विक्रम दिखाता है= Shows gallantry.
आक्रमते=आक्रमण करता है= Attacks.
निष्क्रामति=निकलता है= Comes out.
अतिक्रामति=अतिक्रमण करता है=Trespasses.
परिक्रामति=परिक्रमा करता है= Rounds.
पराक्रमते=पराक्रम दिखाता है= Shows gallantry.

* ***निम्न उपसर्गों को याद करें तथा अपने गुरुओं से उनकी विशेषता समझें-***

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप (२२)।

वृद्धि-सन्धिः वृद्धिरेचि-

नियम-

अ अथवा आ के बाद 'ए' या 'ऐ' होगा तो दोनों को मिलाकर 'ऐ' होगा। अ या आ के बाद 'ओ' या 'औ' होगा तो दोनों के स्थान पर औ होगा।

अ+ए=ऐ। अ+ऐ=ऐ। आ+ए=ऐ। आ+ऐ=ऐ। अ+ओ=औ। अ+औ= औ। आ+औ=औ।

स्मरण रहे-व्याकरण में (अ ए ओ) को गुण तथा (आ ऐ औ) को वृद्धि कहा जाता है।

प्रयोगः-

अत्र+एषः=अत्रैषः। पश्य+एतम्=पश्यैतम्। न+एतत्=नैतत्। जन+ऐक्यम्=जनैक्यम्। जल+ओघः=जलौघः। तण्डुल+ओ-

दनम्=तण्डुलौदनम्।

देव+औदार्यम्=देवौदार्यम्।

कार्य+औचित्यम्=कार्यौचित्यम्।

पुनः स्मरण करें-

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम्।

(१) संज्ञा। (२) परिभाषा। (३) विधिः। (४) नियमः। (५) अतिदेशः। (६) अधिकारः।

उपसर्गप्रयोगः-

गच्छति=जाता है=	Goes.
प्रतिगच्छति=लौटता है=	Comes back/Returns.
निर्गच्छति=बाहर जाता है=	Goes out.
अनुगच्छति=पीछे जाता है=	Goes after.
अधिगच्छति=प्राप्त करता है=	Receives.
आगच्छति=आता है=	Comes.
संगच्छते=मिलता है=	Meets.
उद्गच्छति=ऊपर जाता है=	Goes up.

अवधारयन्तु-

(१) यः प्रतिदिनं लिखति तस्य हस्ताक्षराणि सुन्दराणि भवन्ति=जो रोज लिखता है उसके हस्ताक्षर सुन्दर होते हैं।

(२) यः संस्कृतं पठति किन्तु न वदति चेत् सः कदापि वक्तुं न शक्नोति=जो संस्कृत पढ़ता है किन्तु नहीं बोलता है तो वह कभी भी बोल नहीं सकता है।

(३) यः पठने लज्जां करोति तस्य कदापि प्रगतिः न भवति=जो पढ़ने में लज्जा करता है उसकी कभी भी प्रगति नहीं होती।

(४) यः अध्ययनेन सह स्वकीयस्य चरित्रस्य परिष्कारं करोति स एव जीवने सफलो भवति। केवलं पुस्तकीयज्ञानेन कोऽपि महान् भवितुम् नार्हति। अत एव सत्याचरणे सर्वैः प्रवर्तितव्यम्।

***

सप्तदशपाठः

श्चुत्वसन्धि का पुनरावलोकन करें (देखें पाठ १)।

ष्टुत्वसन्धिः (ष्टुना ष्टुः)-

नियमः-

स् या तवर्ग के अगल बगल ष् या टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) में से कोई भी हो तो स् को ष् तवर्ग को टवर्ग हो जाता है। अर्थात् इनके स्थान पर (स् त् थ् द् ध् न्) ये होते हैं (ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्)।

इष्+तः=इष्टः। दुष्+तः=दुष्टः। रामस्+षष्ठः=रामषष्ठः। उद्+डीनः= उड्डीनः। कृष्+नः=कृष्णः। विष्+नुः=विष्णुः। पेष्+ता=पेष्टा। तत्+टीका= तट्टीका। चक्रिन्+ढौकसे=चक्रिण्ढौकसे।

उपसर्गप्रयोगः-

अयते=चलता है=	Goes.
पलायते=भागता है=	Runs away.
वर्तते=है=	Is.
प्रवर्तते=काम में लगता है=	Attaches in work.
निवर्तते=लौटता है=	Returns.
अनुवर्तते=अनुसरण करता है=	Follows.
परिवर्तते=घूमता है=	Moves/rounds
नयति=ले जाता है=	Carry.
प्रणयति=बनाता है=	Makes.
अपनयति=हटाता है=	Removes.
आनयति=ले आता है=	Brings.
परिणयति=विवाह करता है=	Weds.
निर्णयति=निर्णय करता है=	Gives judgement.
अनुनयति=मनाता है=	Entreats.

उपनयति=उपनयन करता है= Does Upnayan ceremony.
वसति=निवास करता है= Lives.
प्रवसति=विदेश जाता है= Goes foreign.
उपवसति= उपवास करता है= Fasts.

वाक्यप्रयोगः-

(१) अहं चतुर्वादने विद्यालयात् निर्गच्छामि=मैं चार बजे विद्यालय से निकलता हूँ।
At 4 p.m. I come out from the School.

(२) गुरुः गच्छति, शिष्यः तम् अनुगच्छति=गुरु जाते हैं, शिष्य उनके पीछे जाता है।
Teacher goes, Student follows him.

(३) यत् त्वं वदसि तत् अहं न अवगच्छामि=जो तुम कह रहे हो, वह मैं नहीं समझता हूँ।
Whatever you say, I do not understand that.

(४) शिष्यः गुरुम् उपगच्छति=शिष्य गुरु के पास जाता है।
Student goes near to teacher.

(५) त्वं कदा इतः प्रतिगमिष्यसि?=तुम कब यहाँ से लौटोगे?
when do you return from here?

याद करें-

प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये नार्जितं पुण्यं, चतुर्थे किं करिष्यसि?॥

जश्त्वसन्धिः (झलां जशोऽन्ते)-

नियम-झल् (झ् भ् घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द् ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स् ह्) को जश् (ज् ब् ग् ड् द्) होता है पदान्त में।

प्रयोगः-

जगत्+ईशः=जगदीशः। सत्+आचारः=सदाचारः।
सुप्+अन्तः=सुबन्तः। अच्+अन्तः=अजन्तः।
वाक्+ईशः=वागीशः। तत्+ईशः=तदीशः।

निम्न सूत्रों को याद करने का प्रयास करें-

अ इ उ ण् ।१। ऋ ऌ क् ।२। ए ओ ङ् ।३। ऐ औ च् ।४। ह य व र ट् ।५। ल ण् ।६। ञ म ङ ण न म् ।७। झ भ ञ् ।८। घ ढ ध ष् ।९। ज ब ग ड द श् ।१०। ख फ छ ठ थ च ट त व् ।११। क प य् ।१२। श ष स र् ।१३। ह ल् ।।१४।।

उपर्युक्त सूत्र सन्धिज्ञान के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हैं, अत: प्रत्येक संस्कृत अध्येता को ये सूत्र कण्ठस्थ कर लेना चाहिए। इन्हीं के आधार पर ४२ प्रत्याहर (संक्षेपीकरण) बनते हैं। प्रत्याहार का मतलब है-**'प्रत्याहृयन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र असौ प्रत्याहारः'** अर्थात् बहुत से अन्तर्वर्ती वर्णों को छोटे या संक्षेप में कहा जाय उसे प्रत्याहार कहते हैं। जैसे-'अण्' कहने से अ और ण् के बीच में जो हैं उनका भी ज्ञान होता है अर्थात् अ इ उ का बोध होता है।

उपसर्गप्रयोगः-

प्रतीक्षते=प्रतीक्षा करता है=	Waits.
अपेक्षते=चाहता है=	Wants.
परीक्षते=परीक्षा लेता है=	Examines.
उपेक्षते=उपेक्षा करता है=	Does not care.
अन्वीक्षते=जाँच करता है=	checks.
रोहति=उगता है=	Weeps/grows up.
प्ररोहति=उगता है=	Weeps/grows up.
अधिरोहति=उगता है=	Grows up.
आरोहति=चढ़ता है=	Climbs.
अवरोहति=उतरता है=	Comes down.
लपति=बोलता है=	Speaks.
आलपति=बोलता है=	Speaks.
विलपति=रोता है=	Weeps.
संलपति=वार्तालाप करता है=	Talks.
प्रलपति=बक बक करता है=	Talks much.

अपलपति=झूठ बोलता है=	Tells a lie.
वदति=बोलता है=	Speaks.
अनुवदति=अनुवाद करता है=	Translates.
विवदते=झगड़ा करता है=	Quarrels.
प्रतिवदति=जवाब देता है=	Gives answer.

निम्न अन्तरों को समझें-

सामान्य	**प्रेरणार्थक**
पठ्=पठति=पढता है	पाठयति (पढ़ाता है)।
गम्=गच्छति= जाता है	गमयति=भेजता है।
लिख्=लिखति=लिखता है	लेखयति=लिखवाता है।
श्रु=शृणोति=सुनता है	श्रावयति=सुनवाता है।
पा=पिबति=पीता है	पाययति=पिलाता है।
स्था=तिष्ठति=रुकता है	स्थापयति=रुकवाता है/रखता है।
दृश्=पश्यति=देखता है	दर्शयति=दिखाता है।

प्रयोग:-

(१) शिष्य: संस्कृतं पठति।
(२) गुरु: संस्कृतं पाठयति।
(३) बालक: कथां शृणोति।
(४) माता कथां श्रावयति।

याद करें-

शनैः पन्थाः शनैः कन्थाः शनैः पर्वतलङ्घनम्।
शनैर्विद्या शनैः वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः।।
गच्छन् पिपीलिको याति योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति।।

***

अष्टादशपाठः

जश्त्वसन्धिः (झलां जश् झशि)

नियमः-

झल् अर्थात् वर्ग के १, २, ३, ४ (अर्थात् क च ट त प ख छ ठ थ फ ग ज ड द ब तथा घ झ ढ ध भ) को जश् (ज ब ग ड द) हो जाता है, बाद में झश् झ भ घ ढ ध, ज ब ग ड द) होने पर।

प्रयोगः-

बुध्+धिः=बुद्धिः। शुध्+धिः=शुद्धिः। ऋध्+धिः=ऋद्धिः।
युध्+धः=युद्धः। लभ्+धः=लब्धः। दुघ्+धम्=दुग्धम्।
दघ्+धः=दग्धः। क्षुभ्+धः=क्षुब्धः।

प्रत्याहारः-

सन्धि के रहस्य को ठीक से समझने के लिए प्रत्याहार ज्ञान आवश्यक है। अतः १७ पाठ में उल्लिखित सूत्रों के आधार पर बने निम्न प्रत्याहारों को ठीक से समझने का यत्न करें।

(१) अण्=अ इ उ-३

(२) अक्=अ इ उ ऋ लृ-५

(३) अच्=अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ-९

(४) अट्=अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र-१३

(५) अण्=अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल-१४

(६) अम्=अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न-१९

(७) अश्=अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द-२९

(८) अल्=अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह-४२

उपसर्गप्रयोगः-

सीदति	=	दुःखी होता है	=	Feels sorrow.
प्रसीदति	=	प्रसन्न होता है	=	Becomes happy.
पर्यवसीदति	=	समाप्त होता है	=	Ends.
विषीदति	=	दुःखी होता है	=	Feels sorrow.
निषीदति	=	बैठता है	=	Sits down.
अवसीदति	=	थकता है	=	Feels tire.
तिष्ठति	=	ठहरता है	=	Stays.
प्रतिष्ठते	=	जाता है	=	Goes.
अनुतिष्ठति	=	करता है	=	Does work.
उपतिष्ठते	=	उपस्थित होता है	=	Presents.

संकल्पः-

पठामि संस्कृतं नित्यं वदामि संस्कृतं सदा।
ध्यायामि संस्कृतं सम्यग् वन्दे संस्कृतमातरम्।।
संस्कृतस्य प्रचारार्थं लोके संस्थापनाय च।
करोमि कार्यं सततं मरणान्तम् अहर्निशम्।।

चर्त्वसन्धिः(खरि च)-

खर् (ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स) पर (बाद) में होने पर झल् (झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह) को चर् (च ट त क प श ष स) होता है।

प्रयोगः-

सद्+कारः=सत्कारः। उद्+साहः=उत्साहः। तद्+परः=तत्परः।
तज्+छिवः=तच्छिवः। दिग्+पालः=दिक्पालः।

प्रत्याहारः-

(९) इक्=इ उ ऋ ऌ-४
(१०) इच्=इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ-८
(११) इण्=इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल-१३

(१२) उक्=उ ऋ ऌ-३

(१३) एङ्=ए ओ-२

(१४) एच्=ए ओ ऐ औ-४

(१५) ऐच्=ऐ औ-२

(१६) हश्=ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द-२०

(१७) हल्=ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट क प श ष स ह-३४

(१८) यण्=य व र ल-४

(१९) यम्= य व र ल ञ म ङ ण न-९

(२०) यञ्=य व र ल ञ म ङ ण न झ भ-११

(२१) यय्=य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प-२९

(२२) यर्=य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स=३२

(२३) वश्=व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द=१८

उपसर्गप्रयोगः-

सरति	=	जाता है	=	Goes.
प्रसरति	=	फैलता है	=	Expands.
अनुसरति	=	पीछे जाता है	=	Follows.
निःसरति	=	निकलता है	=	Comes out.
अपसरति	=	हटता है	=	Goes away.
परिसरति	=	घूमता है	=	Rounds / Moves.

उद्घोषणा-

संस्कृतं पठ आधुनिको भव। संस्कृतं पठ वैज्ञानिको भव। संस्कृतं वद भारतीयो भव। पठ पठ संस्कृतम्। वद वद संस्कृतम्।

सन्धिः (विसर्जनीयस्य सः)-

नियमः-विसर्ग (:) के बाद खर् (ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स) हो तो विसर्ग को स् हो जाता है। स् के अगल बगल श् या चवर्ग हो तो स् को श् हो जाता है। (देखें पाठ ९)

प्रयोगः-

बालकः+तिष्ठति=बालकस्तिष्ठति। रामः+तरति=रामस्तरति।

कः+चित्=कश्चित्। पुत्रः+चलति=पुत्रश्चलति।

हरिः+च=हरिश्च। रामः+शेते=रामश्शेते।

कृष्णः+च=कृष्णश्च। गुरुः+च=गुरुश्च।

प्रत्याहारः (क्रमशः)-

(२४) वल्-व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह-३३

(२५) रल्-र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह-३२

(२६) मय्-म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प-२४

(२७) ङम्-ङ ण न-३

(२८) झष्-झ भ घ ढ ध-५

(२९) झश्-झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द-१०

(३०) झय्-झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प-२०

(३१) झर्-झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स-२३

(३२) झल्-झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह-२४

(३३) भष्-भ घ ढ ध-४

(३४) जश्-ज ब ग ड द-५

(३५) बश्-ब ग ड द-४

(३६) खय्-ख फ छ ठ थ च ट त क प-१०

(३७) खर्-ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स-१३

(३८) छब्-छ ठ थ च ट त-६

(३९) चय्-च ट त क प-५

(४०) चर्-च ट त क प श ष स-८

(४१) शर्-श ष स-३

(४२) शल्-श ष स ह-४

संकल्पः-

अहं संस्कृतप्रचाराय सर्वदा कार्यं करिष्यामि। प्रतिदिनम् एकं रुप्यकं संस्कृत-प्रचारार्थं स्थापयामि। ये संस्कृतं वदन्ति ते मम सखायः।

प्रहेलिकाः—

पञ्चभर्त्री न पाञ्चाली द्विजिह्वा न च सर्पिणी।
कृष्णमुखी न मार्जारी यो जानाति स पण्डितः।।

प्रातः प्रातः समुत्थाय द्वौ मुनी च कमण्डलू।
अत्र क्रियापदं गुप्तं यो जानाति स पण्डितः।।

कान्तया कान्तसंयोगे किमकारि नवोढया।
अत्रापि चोत्तरं वक्तुं मर्यादा दशवार्षिकी।।

उत्तरम्- (१) लेखनी (२) प्रातः (प्रा पूरणे)
(३) अत्रापि (त्रपुष् लज्जायाम् कर्मणि लुङ्)

***

एकोनविंशपाठः

सूचना-अवशिष्ट सन्धियों को अपने गुरुओं से सीखें।

समासः -

संस्कृत भाषा के सम्यक् ज्ञान के लिए सन्धि एवं समास का सामान्य ज्ञान होना अत्यावश्यक है। इसी दृष्टि से अब समास के विषय में चिन्तन किया जायेगा।

प्रयोगः -

संस्कृत भाषा का प्रयोग पाँच प्रकार से किया जा सकता है।

(१) सकर्मक=कर्मवाला।

(२) अकर्मक=कर्म रहित।

(३) कर्मवाच्य।

(४) भाववाच्य

(५) द्विकर्मक=दो कर्मवाला।

(१) सकर्मकप्रयोगः -

कृष्णः भक्तान् रक्षति=कृष्ण भक्तों की रक्षा करता है।

Krishna saves his followers devotees.

(२) अकर्मकप्रयोगः -

रामस्तिष्ठति=राम ठहरता है।

Ram stays.

(३) कर्मणि प्रयोगः -

प्रजापतिना प्रपञ्चः क्रियते=प्रजापति के द्वारा प्रपञ्च किया जाता है।

Creation is done by Prajapati.

(४) भावे प्रयोगः -

रामेण स्थीयते=राम के द्वारा ठहरा जाता है।

Stopped by Ram.

(५) *द्विकर्मक प्रयोगः-*

गोपालः गां पयः दोग्धि=गोपाल गाय से दूध दुहता है।

Gopal milks from the milking cow.

ये धातुएँ द्विकर्मक हैं।

दुह्=दुहना, याच्=माँगना, प्रच्छ्=पूछना, ब्रू=कहना, जि=जितना आदि।

उपसर्गप्रयोगः-

चरति=चलता है=	Goes.
दुराचरति=दुराचरण करता है=	Behaves bad/Misbehaves
आचरति=व्यवहार करता है=	Behaves.
उपचरति=सेवा करता है=	Serves.
अनुचरति=पीछे चलता है=	Goes back/follows.
परिचरति=सेवा करता है=	Serves.
संचरति/विचरति=विचरण करता है=	Walks/moves.
तरति=तैरता है=	Crosses/Swims
अवतरति=उतरता है=	Comes down.
वितरति=देता है=	Gives.
पतति=गिरता है=	Falls down.
प्रणिपतति=प्रणाम करता है=	Salutes.
आपतति=आ पढ़ता है=	Comes.
उत्पतति=उड़ता है=	Flies.

समास क्या है?-

समसनं समासः। लम्बे वाक्यों को संक्षेप में कहना समास कहलाता है। उचित पदों का विग्रह कर उसके विभक्तियों को हटाकर वाक्य को जोड़ा जाता है तथा विभक्ति अन्त में जोड़ी जाती है। और बातें उदाहरणों से स्पष्ट होंगी।

अथ तत्पुरुषसमासः-

प्रथमातत्पुरुषः- **अर्धं** पिप्पल्याः= अर्धपिप्पली

द्वितीयातत्पुरुषः-	कृष्णं श्रितः=	कृष्णश्रितः
तृतीयातत्पुरुषः-	शङ्कुलया खण्डः=	शङ्कुलाखण्डः
चतुर्थीतत्पुरुषः-	कुण्डलाय हिरण्यम्=	कुण्डलहिरण्यम्
पञ्चमीतत्पुरुषः-	सिंहात् भयम्=	सिंहभयम्
षष्ठीतत्पुरुषः-	कृष्णस्य भक्तः=	कृष्णभक्तः
सप्तमीतत्पुरुषः-	कर्मणि कुशलः=	कर्मकुशलः
नञ्तत्पुरुषः-	न ब्राह्मणः=	अब्राह्मणः

उपसर्गप्रयोगः- (दुधाञ् धारणपोषणयोः)-

दधाति=धारण करता है=	Wears.
विदधाति=करता है=	Does.
परिधत्ते=पहनता है=	Wears.
पिदधाति=ढकता है=	Covers.
निदधाति=रखता है=	Keeps.
अवधत्ते=ध्यान देता है=	Takes care/gives attention.

(पद गतौ)-

पद्यते=जाता है=	Goes.
प्रपद्यते=प्राप्त करता है=	Recieves.
उत्पद्यते=पैदा होता है=	Takes birth.
विपद्यते=दुःखी होता है=	Feels worry.
उपपद्यते=योग्य होता है=	Becomes able.

(मन ज्ञाने)-

मन्यते=मानता है=	Obey.
अवमन्यते=अनादर करता है=	Neglects/disrespects.
अनुमन्यते=सलाह देता है=	Gives advise.
सम्मन्यते=सम्मान करता है=	Honours.

महापुरुषाणां वचनानि-

(१) संस्कृतमेव भारतस्य राष्ट्रभाषा भवितुम् अर्हति।

-श्री माँ-अरविन्दाश्रमस्था।

(२) संस्कृतभाषा अस्माकं भाषाणाम् अर्थे गङ्गानदी इव। अहम् एतत् स्वीकरोमि यत् यदि संस्कृतभाषा शुष्का भवेत् तर्हि सर्वाः अपि भाषाः गतप्राणाः भवेयुः। सर्वे संस्कृतं पठन्तु। संस्कृतेन मम जीवनधारा परिवर्तिता।

-महात्मा गाँधी।

(३) संस्कृतं भारतस्य राष्ट्रभाषा भवेत्।

-सर् सी०वी० रमन।

(४) न जाने विद्यते किं तद् माधुर्यमत्र संस्कृते।
सर्वदैव समुन्मत्ता येन वैदेशिका वयम्॥

-विल्सन।

पठने पाठने वार्तालापे प्रश्ने तथोत्तरे।
वदन्तु संस्कृतं सर्वे गुरुशिष्याः अहर्निशम्॥

-पं० वासुदेव द्विवेदी शास्त्री।

इस श्लोक को याद करें तथा गुरुओं से अर्थ पूछें-

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती
रोगाश्च शत्रव इव प्रहरन्ति देहम्।
आयुः परिस्रवति भिन्नघटादिवाम्भो
लोकस्तथाप्यहितमाचरतीति चित्रम् !॥

***

विंशपाठः

कर्मधारयसमासः-

कर्मधारय समास विशेषण पूर्वपद, विशेष्य पूर्वपद, विशेषण उभयपद, उपमान पूर्वपद, उपमान उत्तरपद, सम्भावना पूर्वपद, अवधारणा पूर्वपद के भेद से सात प्रकार का होता है। प्रत्येक का उदाहरण इस प्रकार है-

(१) विशेषणपूर्वपदकर्मधारयः-

कृष्णश्चासौ सर्पश्च=कृष्णसर्पः।

(२) विशेष्यपूर्वपदकर्मधारयः-

गोपालश्चासौ बालश्च=गोपालबालः।

(३) विशेषण-उभयपदकर्मधारयः-

शीतं च तत् उष्णं च=शीतोष्णम्।

(४) उपमानपूर्वपदकर्मधारयः-

मेघ इव श्यामः=मेघश्यामः।

(५) उपमान-उत्तरपदकर्मधारयः-

नरः सिंह इव=नरसिंहः।

(६) सम्भावनापूर्वपदकर्मधारयः-

गुण इति बुद्धिः=गुणबुद्धिः।

(७) अवधारणापूर्वपदकर्मधारयः-

विद्यैव धनम्=विद्याधनम्।

उपसर्गप्रयोगः-

व्याप्नोति=फैलता है=Expands.

समाप्नोति=समाप्त करता है=Ends.

चिनोति=चुनता है=Collects/elects/sellects.

उपचिनोति=बढ़ाता है-Increase.

अपचिनोति=घटाता है=Makes less.

सञ्चिनोति=इकट्ठा करता है=Collects.

अनुगृह्णाति=कृपा करता है=Please/Blessing.

प्रतिगृह्णाति=दान लेता है=Takes donation.

संगृह्णाति=संग्रह करता है=Collects.

आप्नोति=प्राप्त करता है=Receives.

गृह्णाति=लेता है=Takes.

संगृह्णाति=समेटता है=Collects.

बहुब्रीहिसमासः-

बहुब्रीहि समास भी द्विपद, बहुपद, सह पूर्वपद, संख्योत्तरपद, संख्योभयपद, व्यतिहारलक्षण और दिगन्तराललक्षण के भेद से सात प्रकार का होता है। इनका क्रमशः उदाहरण इस प्रकार है-

(१) द्विपदबहुब्रीहिः-चित्रा गावो यस्य सः=चित्रगुः (गोपः)

(२) बहुपदबहुब्रीहिः-अधिकः उन्नतः अंसः यस्य सः=अधिकोन्नतांसः।

(३) सह पूर्वपदबहुब्रीहिः-सह कृष्णेन वर्तत इति=सकृष्णः।

(४) संख्योत्तरपदबहुब्रीहिः-दशानां समीपे ये सन्ति ते=उपदशाः।

(५) संख्योभयपदबहुब्रीहिः-द्वौ वा त्रयो वा=द्वित्राः।

(६) व्यतिहारलक्षणबहुब्रीहिः-केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् इति= केशाकेशि युद्धम्।

(७) दिगन्तराललक्षणबहुब्रीहिः-दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशः अन्तरालम् दक्षिणपूर्वा।

अव्ययशब्दानामर्थाः-

स्वर्=स्वर्ग= Heaven.

प्रातर्=प्रातःकाल=Morning.

सनुतर्=अन्तर्धान=Disappearing

नीचैस्=नीचा=Below.

चिरम्=कुछ=Late/Little.

किञ्चित्=कुछ=Some/Little.

ऋधक्=सचमुच=Really.

युगपत्=एकाएक=Suddenly.

पृथक्=भिन्न=Separate/different

श्वस्=आगामी कल=Tomorrow.

अन्तर्=बीच में=Middle.

पुनर्=फिर=Again.

जोषम्=चुप होना=To keep quite
बहिस्=बाहर= Out.
अधस्=नीचे=Below.
निकषा=समीप=Near.
वृथा=व्यर्थ=Useless.
न=नहीं=No.
सायम्=सायंकाल=Evening
ईषत्=कुछ=Some/Little.
अवस्=बाहर=Out.
स्वयं=अपने आप=Self.
उच्चैस्=ऊँचा=High.
शनैस्=धीरे=Slowly.
ऋते=विना=Without.
आरात्=दूर या समीप=Far or near
ह्यस्=बीता हुआ कल=Yesterday
दिवा=दिन=Day.
मनाक्=कुछ=Some.
तुष्णीम्=चुप होना=Keeps quite.
समया=समीप=Near.
नक्तम्=रात्रि=Night.

महापुरुषाणां वचनानि-

आबालवृद्धं प्रत्येकं जनं संस्कृते वदन्तं द्रष्टुमिच्छामि।

-पं० मदनमोहन मालवीयः।

संस्कृतभाषा भारतस्य महानिधिः। समाजं सुसभ्यं सुसंस्कृतं मानवीय- गुणसम्पन्नं च कर्तुं बाल्यकालात् एव संस्कृतशिक्षायां विशेषध्यानं दातव्यम्-

-पं० जवाहरलाल नेहरुः।

संस्कृतभाषा अस्माकं कृते सम्मानं बलप्रदानञ्च करोति।

-स्वामी विवेकानन्दः।

भारतीयसंस्कृतेः ज्ञानं संस्कृताध्ययनं विना न भवितुमर्हति।

-डॉ० हेडगेवारः।

श्लोकः कण्ठस्थीकर्तव्यः-

विद्यया वपुषा वाचा वस्त्रेण विभवेन च।
वकारैः पञ्चभिः युक्तो नरो भवति पूजितः।।

***

एकविंशपाठः

द्विगुसमासः-

एकवद्भावी तथा अनेकवद्भावी के भेद से द्विगुसमास दो प्रकार का होता है।

(१) एकवद्भावी द्विगुसमासः- (क) त्रयाणां शृङ्गाणां समाहारः-त्रिशृङ्गम्।
(ख) पञ्चानां फलानां समाहारः-पञ्चफली।

(२) अनेकवद्भावी द्विगु-सप्त च ते ऋषयश्च=सप्तर्षयः।

द्वन्द्वसमासः-

(१) इतरेतरद्वन्द्वः-रामश्च कृष्णश्च=रामकृष्णौ।

(२) समाहारद्वन्द्वः-हरिश्च हरश्च गुरुश्च एषां समाहारः-हरिहरगुरवः।

अव्ययीभावसमासः-

तटं तटं प्रति=अनुतटम्।

गिरिं गिरिं प्रति=अनुगिरि।

क्रमम् अनतिक्रम्य वर्तते इति=यथाक्रमम्।

इन्हें ध्यान से समझें-

नञ्=नहीं= No.

हेतौ=निमित्त= Reason.

सामि=आधा= Half.

वत्=समान= Equal / Like.

ब्राह्मणवत्=ब्राह्मण के समान= Equal to Brahmin.

क्षत्रियवत्=क्षत्रिय के समान= Equal to Kshatriya.

सना, सनत् सनात्=नित्य रहने वाला= Immortal.

उपधा=भेद= Difference.

तिरस्=टेढ़ा या तिरस्कार= Bent/Contempt.

अन्तरा=मध्य या विना= Middle or without.

अन्तरेण=विना= Without.

समास एवं कारक के रहस्यों को समझने के लिए निम्न श्लोकों को अवश्य कण्ठस्थ करें-

षोढा समासः संक्षेपात् अष्टाविंशतिधा पुनः ।
नित्यानित्यत्वयोगेन लुगलुक्त्वेन च द्विधा ॥१॥

तत्राष्टधा तत्पुरुषः सप्तधा कर्मधारयः ।
सप्तधा च बहुब्रीहिर्द्विगुराभाषितो द्विधा ॥२॥

द्वन्द्वोऽपि द्विविधो ज्ञेयोऽव्ययीभावो द्विधा मतः ।
तेषां पुनः समासानां प्राधान्यं स्याच्चतुर्विधम् ॥३॥

चकारबहुलो द्वन्द्वः स चासौ कर्मधारयः ।
यस्य येषां बहुब्रीहिः शेषस्तत्पुरुषः स्मृतः ॥४॥

कर्तृकर्मक्रियायुक्तः प्रयोगः स्यात् सकर्मकः ।
अकर्मकः कर्मशून्यः कर्मद्वन्द्वो द्विकर्मकः ॥५॥

वृक्षशाखा तत्पुरुषः **श्वेताश्वः** कर्मधारयः ।
रक्तवस्त्रो बहुब्रीहिर्द्वन्द्व**श्चन्द्रदिवाकरौ** ॥६॥

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु **यन्नव्येति** तदव्ययम् ॥७॥

आदौ **कर्तृपदं** वाच्यं द्वितीयादिपदं ततः ।
क्त्वा तुमुन् ल्यप् च मध्ये स्यात् कुर्यात् अन्ते क्रियापदम्॥८॥

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च ।
अपादानाधिकरणम् इत्याहुः कारकाणि षट् ॥९॥

निर्देशे प्रथमा प्रोक्ता सैव चामन्त्रणेष्वपि ।
द्वितीया कर्मणि प्रोक्ता तृतीयानुक्त-कर्तरि ॥१०॥

करणे हेतावपि ज्ञान-ज्ञाप्येङ्गविकृतौ तथा ।
तादर्थ्ये सम्प्रदाने च चतुर्थी स्याच्च सर्वदा ॥११॥

हेत्वपादानयोश्चैव पञ्चमी कथिता बुधैः ।
सम्बन्धे च सदा षष्ठी आधारे सप्तमी भवेत् ॥१२॥

प्रथमा कर्तरि यदा द्वितीया कर्मणि तदा ।
तृतीया कर्तरि यदा कर्मणि प्रथमा तदा ॥१३॥

महापुरुषाणां वचनानि-

(१) एकात्मता-संरक्षणं भारतस्य महती समस्या, एतस्याः समाधानं तदैव भविष्यति यदा संस्कृतं समस्तप्रदेशानां सम्पर्क-भाषा भवेत्। एतदर्थं सरलसंस्कृतम् आवश्यकम्। ***-श्रीमती इन्दिरा गान्धी।***

(२) संस्कृतभाषा प्रत्येकजनं यथार्थमानवं कर्तुं शक्नोति।

-सुभाषचन्द्र वसुः।

(३) संस्कृतभाषा विश्वस्य (अन्ताराष्ट्रिय) भाषा भवितुम् अर्हति।

-सर् मिर्जा इस्माइल्।

***

द्वाविंशपाठः

अव्ययशब्दानामर्थाः -

च=और=And.
ह=प्रसिद्ध=Famous.
एव=निश्चय=Assure/sure.
शाश्वत्=सदा=Forever.
पूपत्=प्रश्न/प्रशंसा=Question.
कुवित्=बहुत्=Many/more/lot.
चेत्=यदि=If.
अत्र=यहाँ=Here.
नह=निषेध पूर्वकारम्भ=Negative.
नकिः=वर्जन=Leave/Negative.
माङ्=निषेध=Prohibition.
यावत्=जितना=As much.
त्वै=विवर्त=
द्वै=दान=Gift.
तथापि=तो भी=Even then
किल=प्रसिद्धि=Fame.
अथ=आरम्भ=Starting.
आदह=प्रारम्भ/निन्दा=Starting.
वा=विकल्प=Option.
अह=स्पष्ट=Clear.
एवं=निश्चय=Surity.
युगपत्=सहसा=Suddenly.
सूपत्=प्रश्न/प्रशंसा=Praise.
नेत्=शङ्का=Doubt.
चेत्=यदि=If.
कच्चित्=प्रश्न=Question.
हन्त=हर्ष/विषाद=Happiness and unhappiness
माकिम्=वर्जन=Negative.
नाकिम्=वर्जन=Negative.
नञ्=निषेध=Negative.
तावत्=उतना=That much.
न्वौ=ितार्गः=Counter argueme‌nt.
रै=हविदान=Giving sacrifice.
खलु=निश्चय/निषेध=Sure.
अथो=प्रारम्भ=Start at.
स्म=भूतकाल=Past tense.

१० लकारों का अर्थ-

(१) लट्-वर्तमानकाल=पठति।

(२) लिट्=परोक्ष अनद्यतन भूतकाल=पपाठ।

(३) लुट्=अनद्यतन भविष्यत्=पठिता।

(४) लृट्=सामान्य भविष्यत्काल=पठिष्यति।

(५) लेट्=शर्त लगाना और आशंका। (इसका प्रयोग मात्र वेदों में है)

(६) लोट्=आज्ञा प्रार्थना=पठतु।

(७) लङ् =अनद्यतन भूतकाल=अपठत्।

(८) लिङ् =विधि, प्रार्थना आशीर्वाद आदि=पठेत्।

(९) आशीर्लिङ् =भगवान् तव सहायकः भूयात्।

(१०) लुङ् =सामान्य भूतकाल=अपठीत्, अपाठीत्।

(११) लृङ् =हेतु, हेतुमद्भाव आदि लिङ् के अर्थ में जब क्रिया की असिद्धि हो=अपठिष्यत्।

पुनः स्मरणार्थम् (सन्धि संक्षेपः)-

(१) यण्सन्धिः -

प्रति+एकः=प्रत्येकः — यदि+अपि=यद्यपि

इति+आदिः=इत्यादिः — मधु+अरिः=मध्वरिः

धातृ+अंशः=धात्रंशः — लृ+आकृतिः=लाकृतिः

(२) अयादिसन्धिः -

हरे+ए=हरये — ने+अनम्=नयंनम्

गुरो+ए=गुरवे — शे+अयनम्=शयनम्।

भो+अति=भवति — गै+अति=गायति।

भौ+अकः=भावकः — द्वौ+एतौ=द्वावेतौ।

(३) गुणसन्धिः -

महा+ईशः=महेशः — न+इति=नेति

सप्त+ऋषिः=सप्तर्षिः — हित+उपदेशः=हितोपदेशः

ब्रह्म+ऋषिः=ब्रह्मर्षिः — तव+लृकारः=तवल्कारः

(४) वृद्धिसन्धिः -

अत्र+एषः=अत्रैषः — न+एतत्=नैतत्।

जल+ओघः=जलौघः — कृष्ण+औत्कण्ठ्यम्=कृष्णौत्कण्ठ्यम्।

(५) दीर्घसन्धिः -

दैत्य+अरिः=दैत्यारिः — श्री+ईशः=श्रीशः

होतृ+ऋृकारः=होतृकारः — विद्या+आलयः=विद्यालयः

भानु+उदय:=भानूदय:।

(६) पूर्वरूपसन्धि: -

हरे+अव=हरेऽव
विष्णो+अव=विष्णोऽव

(७) श्चुत्वसन्धि: -

रामस्+शेते=रामश्शेते
रामस्+चिनोति=रामश्चिनोति
सत्+चित्=सच्चित्
शार्ङ्गिन्+जय=शार्ङ्गिञ्जय

(८) ष्टुत्वसन्धि: -

इष्+त:=इष्ट:
रामस्+षष्ठ:=रामष्षष्ठ:
उद्+डीन:=उड्डीन:
चक्रिन्+ढौकसे=चक्रिण्ढौकसे

(९) जश्त्वसन्धि: -(क)

जगत्+ईश:=जगदीश:
सुप्+अन्त:=सुबन्त:
सत्+आचार:=सदाचार:
अच्+अन्त:=अजन्त:

(१०) जश्त्वसन्धि: -(ख)

बुध्+धि:=बुद्धि:
लभ्+ध:=लब्ध:
दुघ्+धम्=दुग्धम्
क्षुभ्+ध:=क्षुब्ध:

(११) चर्त्वसन्धि: -

सद्+कार:=सत्कार:
सद्+पुत्र:=सत्पुत्र:
उद्+साह:=उत्साह:
तद्+पर:=तत्पर:

(१२) अनुस्वारसन्धि: -

सत्यम्+वद=सत्यं वद
गृहम्+गच्छ=गृहं गच्छ
अध्ययनम्+कुरु=अध्ययनं कुरु
ईश्वरम्+नमामि=ईश्वरं नमामि

(१३) विसर्गसन्धि: -

छात्र:+तिष्ठति=छात्रस्तिष्ठति
हरि:+च=हरिश्च
बाल:+तरति=बालस्तरति
राम:+शेते=रामश्शेते

(१४) रूत्वसन्धि: -

मुनि:+अवदत्=मुनिरवदत्
गुरु:+अस्ति=गुरुरस्ति
हरे:+एव=हरेरेव
गुरो:+धनम्=गुरोर्धनम्

(१५) उत्वसन्धि: -(क)

क:+अपि=कोऽपि
बालक:+अस्ति=बालकोऽस्ति

कृष्णः+अवदत्=कृष्णोऽवदत् कः+अयम्=कोऽयम्

(१६) उत्वसन्धिः-(ख)

रामः+गच्छति=रामो गच्छति देवः+जयति=देवो जयति

(१७) यत्वसन्धिः-

देवाः+गच्छन्ति=देवा गच्छन्ति रामः+इच्छति=राम इच्छति

(१८) सुलोपसन्धिः-

सः+गच्छति=स गच्छति सः+लिखति=स लिखति

उच्चैः वाचनं कुर्वन्तु

* लसतु संस्कृतं चिरं गृहं गृहे गृहे च पुनरपि।

* संस्कृतेन सम्भाषणं कुरु, जीवनस्य परिवर्तनं कुरु।

* संस्कृतमेव राष्ट्रभाषा, संस्कृतमेव विश्वभाषा।

* कल-कल, छल-छल, प्रवहतु दिशि-दिशि पावनसंस्कृतधारा।

* टाटा-बाय्-बाय् नहि 'नमो नमः' हैलो नहि 'हरिओम्'।

* संस्कृतं कस्यापि एकदेशस्य, एकस्याः जातेः धर्मस्य वा भाषा नास्ति, अपितु संस्कृतं सर्वेषाम् अस्ति।

अतः संस्कृतस्य अध्ययनं नाम न केवलम् एकस्याः भाषायाः अध्ययनम् अपितु प्राचीनतमभारतीयज्ञान-विज्ञानेन सह सम्पर्कस्थापनम्, तद्प्रति सम्मान-प्रदर्शनञ्चास्ति।

* अत एव इयं भाषा सर्वेषां सनातनपरंपरानुयायिनाम् अनिवार्यभाषा अस्ति।

* यः आर्यावर्ते जन्म लब्ध्वापि संस्कृतं न जानाति धिक् तं पशुसमं जनम्।

***

त्रयोविंशः पाठः

पुनः स्मरणार्थं कारकोदाहरणानि-

प्रथमा (कर्ता)-रामः पठति। छात्रः गृहं गच्छति। गुरुः पाठयति। शिष्यः पठति।

द्वितीया (कर्म)-सः पुस्तकं पठति। सः प्रश्नं पृच्छति। अहं संस्कृतं पठामि। सः ग्रामं प्रति गच्छति। विद्यालयं परितः पुष्पाणि सन्ति। धिक् दुर्जनम्।

तृतीया (करण)- पादाभ्यां गच्छति। लेखन्या लिखति। मुखेन वदति। नेत्राभ्यां पश्यति। दुर्जनेन पुत्रेण किं प्रयोजनम्। अलं विवादेन।

चतुर्थी (सम्प्रदान)- (नमः, स्वस्ति, रुच्) निर्धनाय धनं ददाति। छात्राय पुस्तकं देहि। गुरवे नमः। जनकाय नमः। पुत्राय स्वस्ति। बालकाय मिष्टान्नं रोचते।

पञ्चमी (अपादान)-(भय, अध्ययन) सः गृहात् आगच्छति। वृक्षात् पत्रं पतति। हिमालयात् गङ्गा प्रवहति। सिंहात् मृगः बिभेति। छात्रः उपाध्यायात् अधीते।

षष्ठी (सम्बन्धः)-रामस्य पुत्रः। मम पिता। अयं तस्य शिष्यः।

सप्तमी (अधिकरण)-गृहे निवसति। विद्यालये पठति। नगरे मनुष्याः सन्ति।

श्लोक भी स्मरण करें-

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणम् इत्याहुः कारकाणि षट्।।

* षष्ठी का क्रिया के साथ अन्वय न होने से इसे कारक नहीं माना जाता। इसलिए कारक छ हुए।

कारकलक्षणम्-

कियान्वयित्वं कारकत्वम्।

वाच्यपरिवर्तनाभ्यासः-

कर्तृवाच्यम्	**कर्मवाच्यम्**
अहं पठामि	मया पठ्यते।

त्वं पठसि	त्वया पठ्यते।
सः पठति	तेन पठ्यते।
सा पठति	तया पठ्यते।
सः बालकः पठति	तेन बालकेन पठ्यते।
इयं बालिका पठति	अनया बालिकया पठ्यते।
आवां पठावः	आवाभ्यां पठ्यते।
वयं पठामः	अस्माभिः पठ्यते।
इमौ बालकौ पठतः	आभ्यां बालकाभ्यां पठ्यते।
इमे बालिके पठतः	आभ्यां बालिकाभ्यां पठ्यते।
भवन्तौ पठतः	भवद्भ्यां पठ्यते।
भवत्यौ पठतः	भवतीभ्यां पठ्यते
अहं श्लोकं पठामि	मया श्लोकः पठ्यते।
अहं पुस्तकं पठामि	मया पुस्तकं पठ्यते।
अहं ग्रन्थं पठामि	मया ग्रन्थः पठ्यते।
अहं श्लोकान् पठामि	मया श्लोकाः पठ्यन्ते।
अहं पुस्तके पठामि	मया पुस्तके पठ्येते।
अहं पुस्तकानि पठामि	मया पुस्तकानि पठ्यन्ते।
अहं गीतं शृणोमि	मया गीतं श्रूयते।
अहं गीते शृणोमि	मया गीते श्रूयेते।
अहं गीतानि शृणोमि	मया गीतानि श्रूयन्ते।

कर्तृवाच्यम्-

कर्तरि प्रत्यये जाते प्रथमा कर्तृकारके।
द्वितीयान्तं च कर्म स्यात् कर्त्रधीनं क्रियापदम्।।

कर्मवाच्यम्-

कर्मणि प्रत्यये जाते तृतीया कर्तृकारके।
प्रथमान्तं च कर्म स्यात् कर्माधीनं क्रियापदम्।।

सूचना-

इसी प्रकार भूतकाल भविष्यत् कालों में भी अभ्यास करना चाहिए।

***

चतुर्विंशः पाठः

सूचना-

* करोति इति पदस्य सहयोगेन बहूनि क्रियापदानि निर्मातुं शक्यन्ते।

यथा-

भोजनं करोति। गायनं करोति। पाठनं करोति।
पठनं करोति। हसनं करोति। गमनं करोति।
दर्शनं करोति। आगमनं करोति। लेखनं करोति।
श्रवणं करोति। भाषणं करोति। पानं करोति।
जागरणं करोति। शयनं करोति।

एवमेव करोषि, करोमि इत्यादि क्रियापदानाम् अपि प्रयोगाः कर्तुं शक्यन्ते।

कृधातोः लट्लकारस्य रूपाणि स्मरन्तु-

प्र.पु.	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म.पु.	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ.पु.	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

प्रयोगः-

सः पठनं करोति। तौ पठनं कुरुतः। ते पठनं कुर्वन्ति।
त्वं पठनं करोषि। युवां पठनं कुरुथः। यूयं पठनं कुरुथ।
अहं पठनं करोमि। आवां पठनं कुर्वः। वयं पठनं कुर्मः।

लृट्लकारः भविष्यत् कालः-

करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

(इसका पूर्ववत् अभ्यास करें)

सूचना- भूतकालस्य कृते सम्यक् स्मरन्तु-

(पुं०) कृतवान्	कृतवन्तौ	कृतवन्तः
(स्त्री०) कृतवती	कृतवत्यौ	कृतवत्यः

प्रयोगः -

राम: पठनं कृतवान्
रामौ पठनं कृतवन्तौ
रामा: पठनं कृतवन्त:

* त्वं, युवां, यूयं, एवं अहं, आवां, वयं के साथ भी इसी प्रकार प्रयोग करें।

(स्त्री.) सीता पठनं कृतवती
सीते पठनं कृतवत्यौ
सीता: पठनं कृतवत्य:

* त्वम्, अहं आदि के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं।

तुमुन् प्रत्ययः -

सूचना-अस्य प्रत्ययस्य निमित्तार्थे (के लिए अर्थ में) प्रयोग: भवति।

सामान्यरूपम्	**प्रेरणार्थकरूपम्**
पठितुम्=पढने=To Study	पाठयितुम्
कर्तुम्=करने= To do	कारयितुम्
गन्तुम्=जाने=To go	गमयितुम्
लिखितुम्=लिखने=To write	लेखयितुम्
भवितुम्=होने=To be	भावयितुम्
वदितुम्=बोलने=To speak	वादयितुम्
स्थातुम्=रहने=To Live	स्थापयितुम्
पातुम्=पीने=To drink	पाययितुम्
द्रष्टुम्=देखने=To see/look	दर्शयितुम्
नेतुम्=ले जाने=To take	नाययितुम्
प्रष्टुम्=पूछने=To ask	प्रच्छयितुम्
कथयितुम्=कहने=To tell	कथयितुम्
ज्ञातुम्=जानने=To know	ज्ञापयितुम्
दातुम्=देने=To give	दापयितुम्
ग्रहीतुम्=लेने=To take	ग्राहयितुम्

* **शक्, इष्, गम्, ज्ञा धातु के लट् लकार के रूप स्मरण करें।**

शक्-	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

इष्- इच्छति इच्छतः इच्छन्ति, इच्छसि इच्छथः इच्छथ इच्छामि इच्छावः इच्छामः।

गम्- गच्छति गच्छतः गच्छन्ति, गच्छसि गच्छथः गच्छथ, गच्छामि गच्छावः गच्छामः।

ज्ञा- जानाति जानीतः जानन्ति। जानासि जानीथः जानीथ। जानामि जानीवः जानीमः।

वाक्यप्रयोगः-

(१) सः कार्यं कर्तुं शक्नोति। सः गृहं गन्तुं शक्नोति। त्वं जलं पातुं शक्नोषि। अहं गृहं गन्तुं शक्नोमि। वयं संस्कृतं वक्तुं शक्नुमः।

(२) सः पठितुम् इच्छति। ते गन्तुम् इच्छन्ति। त्वं द्रष्टुम् इच्छसि? अहं कार्यं कर्तुम् इच्छामि। वयं संस्कृतेन वक्तुम् इच्छामः।

(३) सः पठितुं गच्छति। त्वं जलं पातुं गच्छसि। अहं द्रष्टुं गच्छामि।

(४) सः पठितुं जानाति। त्वं दातुं जानासि। अहं कर्तुं जानामि।

संकल्पः-

(प्र०)	(उ०)
किं तव नाम?	संस्कृत-भक्तः।
कः तव ग्रामः?	संस्कृत-ग्रामः।
का तव भाषा?	संस्कृत-भाषा।
किं तव लक्ष्यम्?	संस्कृत-सेवा।
कः तव बन्धुः?	संस्कृत-प्रेमी।
किं तव मित्रम्?	संस्कृत-सेवी।
कः तव शत्रुः?	संस्कृत-द्रोही।
कः तव पूज्यः?	संस्कृतनिष्ठः।

***

पञ्चविंशः पाठः

अव्ययशब्दानामर्थाः -

ज्योक्=शीघ्र=Soon/fast.
शम्=कल्याण=Welfare.
सहसा=अकस्मात्=Suddenly.
विना=विना=Without.
नाना=अनेक=Many.
स्वस्ति=आशीर्वाद=Blessings.
स्वधा=पितृ के लिए दान=Donation for ancestors.
अलम्=बस, समर्थ=Stop/enough/able.
अन्यत्=और=Other.
उपांशुः=एकान्त=Solitude.
क्षमा=क्षमा=Excuse.
वषट्=देवताओं को हवि देना=Sacrificial to god.
श्रौषट्=देवताओं को हवि देना=Sacrificial to god.
बौषट्=देवताओं को हवि देना=Sacrificial to god.
विहायसा=आकाश=Sky/space.
दोषा=रात=Night.
मृषा=झूठ=Lie.
मिथ्या=झूठ=Lie.
मुधा=व्यर्थ=Useless.
पुरा=पहले=Earlier/before.
मिथोः=साथ=Together/with.
मिथस्=परस्पर=One another/each other.
पायस्=अक्सर=Often.
मुहुस्=बारम्बार=again and again.
प्रवाहुकम्=एकदम=Instantly.
प्रवाहिका=एकदम=Instantly.
आर्यहलम्=बलात्=With force.
अभीक्ष्णम्=निरन्तर=Forever/Continuous.
साकम्=साथ=With.
नमस्=प्रणाम=Salutation.
धिरुक्=धिक्कार=Hegitate fie.
अथ=प्रारम्भ/अनन्तर=Begining/After.
ओम्=स्वीकृति=Acceptance.
आम्=हाँ=Yes.
प्रताम्=ग्लानि=Compunction.
प्रशाम्=समान=Equal.

कामम्=यथेच्छ=Enough
भूयः=पुनः=Again
परम्=परन्तु=But
मङ्क्षु=शीघ्र=Quickly
झटिति=शीघ्र=Quickly
अवश्यम्=अवश्य=Certainly
सुष्ठु=अच्छा=Good
वरम्=अच्छा=Good
सुदि=शुक्लपक्ष=Lunar month
आहोस्वित्=विकल्प=Option
दिष्ट्या=भाग्यसे=By fate
हुम्=भर्त्सना=Admonition
अद्यत्वे=आजकल=Now a days
असकृत्=बार-बार=Again & again
अह्नाय/सत्वरम्=शीघ्र=Soon
उताहो=विकल्प=Option
प्रसह्य=बलात्=Forcefully
इति=समाप्ति=End
स्थाने=उचित=Right
परुत्=परसाल=Last year
ऐषमः=इस वर्ष=This year

प्रकामम्=यथेच्छ=Sufficient
सांप्रतम्=इस समय=This time
साक्षात्=सामने=In front
आशु=शीघ्र=Quickly
झटिति=शीघ्र=Quickly
ओम्=हाँ=Yes
अञ्जसा=अच्छा/जल्दी=Good/soon
वदि=कृष्णपद=Dark half of a lunar month
संवत्=वर्ष=Year
व=समानता=Equality
चटु/चाटु=चापलुसी=Flattery
इव=समानता=Equality
सकृत्=एकबार=One time
प्रेत्य/अमुत्र=परलोक=Next/other world
जातु=कदाचित्=Perhaps
किमुत=विकल्प=Option
किञ्च=इसके अतिरिक्त=Extra
स्थाने=उचित=Right
उररी/उरी=स्वीकृति=Acceptancc
परारि=दो वर्ष पहले=Before two years

संकल्पः-

मातृभूमिः भारतम्-मातृभाषा संस्कृतम्।
समाजस्य हितं-संस्कृते निहितम्।
संस्कृतस्य अवमाननम्, मम अवमाननम्।
विना संस्कृतं न संस्कृतिः।
'गुड्मर्निङ्' न हि 'सुप्रभातम्' थेंवस न हि 'धन्यवादः'।

एतेषां क्रियापदानां (धातूनां) शनैः शनैः अभ्यासः कर्तव्यः-

अस्-होना	=	To be	=	अस्ति
पठ्-पढ़ना	=	To read	=	पठति
वद्-बोलना	=	To speak	=	वदति
गम्-जाना	=	To go	=	गच्छति
स्था-रुकना	=	To stay	=	तिष्ठति
पा-पीना	=	To drink	=	पिबति
दृश्-देखना	=	To see	=	पश्यति
नी-ले जाना	=	To carry	=	नयति
भू-होना	=	To be	=	भवति
कथ्-कहना	=	To tell	=	कथयति
लिख्-लिखना	=	To write	=	लिखति
इष्-चाहना	=	To wish	=	इच्छति
प्रच्छ्-पूछना	=	To ask	=	पृच्छति
नृत्-नाचना	=	To dance	=	नृत्यति
कृ-करना	=	To do	=	करोति
श्रु-सुनना	=	To heard	=	शृणोति
शक्-सकना	=	To be able	=	शक्नोति

किं वारं वारं चिन्तनीयम्?

कः कालः कानि मित्राणि को देशः कौ व्ययागमौ।
कश्चाहं का च मे शक्तिः इति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः।।

***

षड्विंशः पाठः

क्त्वाप्रत्ययः -

(पूर्वकालिकक्रियार्थे क्त्वा (त्वा) प्रत्ययो भवति)

सामान्यरूपम्-	*प्रेरणार्थकरूपम्*
पठित्वा=पढ़कर=After study.	पाठयित्वा=पढ़ाकर=
कृत्वा=कर या करके=After doing	कारयित्वा=कराकर=
गत्वा=जाकर=After going.	गमयित्वा=भेजकर=
लिखित्वा=लिखकर=After writing	लेखयित्वा=लिखवाकर=
भूत्वा=होकर=After being	भावयित्वा=होवाकर=
वदित्वा=बोलकर=After speaking	वादयित्वा=बुलवाकर=
स्थित्वा=ठहरकर=After stoping/Staying	स्थापयित्वा=रखवाकर=
पीत्वा=पीकर=After drinking	पाययित्वा=पिलाकर=
दृष्ट्वा=देखकर=After seeing	दर्शयित्वा=दिखाकर=
नीत्वा=ले जाकर=After taking	नाययित्वा=लिवाकर=
पृष्ट्वा=पूछकर=After Asking	प्रच्छयित्वा=पूछवाकर=
कथयित्वा=कहकर=After Telling	कथयित्वा=कहवाकर=
ज्ञात्वा=जानकर=After Knowing	ज्ञापयित्वा=जनवाकर=
दत्वा=देकर=After Giving	दापयित्वा=दिलाकर=
गृहीत्वा=लेकर=After Taking	ग्राहयित्वा=ग्रहण कराकर=
नत्वा=नमस्कारकर=After saluting	नमयित्वा=नमस्कार कराकर=
श्रुत्वा=सुनकर=After Hearing	श्रावयित्वा=सुनवाकर=
हसित्वा=हँसकर=After Laughing	हासयित्वा=हँसाकर=
शयित्वा=सोकर=After Sleeping	शाययित्वा=सुलाकर=

दा (देना To give) लट्लकारस्य रूपाणि-

ददाति दत्तः ददति, ददासि दत्थः दत्थ, ददामि दद्वः दद्मः।

जागृ (जागना To awake) लट्लकारस्य रूपाणि-

जागर्ति जागृतः जाग्रति, जागर्षि जागृथः जागृथ, जागर्मि जागृवः जागृमः।

अद् (खाना To eat) लट्लकारस्य रूपाणि-

अत्ति अत्तः अदन्ति, अत्सि अत्थः अत्थ, अद्मि अद्वः अद्मः।

वाक्येषु प्रयोगः-

रामः पाठं पठित्वा, स्नानं कृत्वा, पत्रं लिखित्वा, पुस्तकानि च गृहीत्वा विद्यालयं गच्छति।

अहं जलं पीत्वा, चित्रं दृष्ट्वा, गुरुं नत्वा, कथां श्रुत्वा, पाठं पृष्ट्वा आपणं गच्छामि।

गुरुः पाठं पाठयित्वा, गृहकार्यं कारयित्वा, कथां श्रावयित्वा छात्रान् हासयित्वा विद्यालयात् गृहम् अगच्छत्।

क्तप्रत्ययः-(स्मरणार्थम्)

भूतकालार्थे धातुभ्यः क्तप्रत्ययो भवति। अस्मात् प्रत्ययात् निष्पन्न-शब्दानां त्रिषु एव लिङ्गेषु रूपाणि चलन्ति-

सामान्ये	प्रेरणार्थके
(पु.) पठितः पठितौ पठिताः	पाठितः पाठितौ पाठिताः
(स्त्री.) पठिता पठिते पठिताः	पाठिता पाठिते पाठिताः
(नपु.) पठितम् पठिते पठितानि	पाठितम् पाठिते पाठितानि
(पुं.) गतः गतौ गताः	गमितः गमितौ गमिताः
(स्त्री.) गता गते गताः	गमिता गमिते गमिताः
(नपुं.) गतम् गते गतानि	गमितम् गमिते गमितानि

	सामान्ये	प्रेरणार्थके
(पुं.)	लिखितः लिखितौ लिखिताः	लेखितः लेखितौ लेखिताः
(स्त्री.)	लिखिता लिखिते लिखिताः	लेखिता लेखिते लेखिताः
(नपुं)	लिखितम् लिखिते लिखितानि	लेखितम् लेखिते लेखितानि

धातुरूपाणि-

गद् (स्पष्ट बोलना)	अर्च् (पूजा करना)
(To speak clear)	(To worship)
गदति गदतः गदन्ति	अर्चति अर्चतः अर्चन्ति
गदसि गदथः गदथ	अर्चसि अर्चथः अर्चथ
गदामि गदावः गदामः	अर्चामि अर्चावः अर्चामः

वाक्येषु प्रयोगः-

(पुं.) तेन ग्रन्थः पठितः।
तेन ग्रन्थौ पठितौ।
तेन ग्रन्थाः पठिताः।

(स्त्री.) त्वया गीता पठिता।
त्वया गीते पठिते।
त्वया गीताः पठिताः।

(नपुं.) मया पत्रं पठितम्।
मया पत्रे पठिते।
मया पत्राणि पठितानि।

एवमेव-

रामेण ग्रामः गतः। त्वया लक्ष्मणपुरं गतम्। मया वाराणसी गता। तेन पत्रं लिखितम्। त्वया कथा लिखिता। मया गीतं लिखितम्। व्यासेन पुराणानि लिखितानि। श्रीमता वाल्मीकिना रामायणं लिखितम्। श्रीमता कालिदासेन रघुवंशः लिखितः।

एतेषां क्रिया पदानां (धातूनां) शनैः शनैः अभ्यासः कार्यः-

प्र+आप्=पाना	=	To obtain	=	प्राप्नोति
ज्ञा=जानना	=	To know	=	जानाति
ग्रह्=ग्रहण करना	=	To take	=	गृह्णाति

क्री=खरीदना	=	To buy	=	क्रीणाति
दा=देना	=	To give	=	ददाति
सेव्=सेवा करना	=	To serve	=	सेवते
लभ्=पाना	=	To get	=	लभते
मन्=सोचना	=	To think	=	मन्यते

संकल्पः-(उच्चैः वक्तव्यम्)

पठत-पठत-संस्कृतभाषाम्
लिखत-लिखत-संस्कृतभाषाम्।
रटत-रटत-संस्कृतभाषाम्
वदत-वदत-संस्कृतभाषाम्।
पूर्वजानां भाषा-संस्कृतभाषा
देवानां भाषा-संस्कृतभाषा
वेदानां भाषा-संस्कृतभाषा

युष्माकं भाषा-संस्कृतभाषा
अस्माकं भाषा-संस्कृतभाषा
तेषां भाषा-संस्कृतभाषा
सर्वजातीनां भाषा-संस्कृतभाषा
सर्वधर्माणां भाषा-संस्कृतभाषा
नारीणां भाषा-संस्कृतभाषा
सर्वेषां भाषा-संस्कृतभाषा

***

सप्तविंशः पाठः

शतृप्रत्ययः-

वर्तमाने अर्थे धातुभ्यः शतृ (अत्) प्रत्ययो जायते। शतृप्रत्ययान्तस्य रूपाणि त्रिषु एव लिङ्गेषु चलन्ति-

पठ्+शतृ=पठत् (पढ़ता हुआ) (Like countinuous tense)

(पुं.) पठन् पठन्तौ पठन्तः (स्त्री.) पठन्ती पठन्त्यौ पठन्त्यः

गच्छन् गच्छन्तौ गच्छन्तः गच्छन्ती गच्छन्त्यौ गच्छन्त्यः

लिखन् लिखन्तौ लिखन्तः लिखन्ती लिखन्त्यौ लिखन्त्यः

धातुरूपाणि-

द्युत् (चमकना) लट्लकार	**शुभ् (शोभित होना)**
द्योतते द्योतेते द्योतन्ते	शोभते शोभेते शोभन्ते
द्योतसे द्योतेथे द्योतध्वे	शोभसे शोभेथे शोभध्वे
द्योते द्योतावहे द्योतामहे	शोभे शोभावहे शोभामहे

क्षुभ् (घबड़ाना)	**तुभ् (मारना)**
क्षोभते क्षोभेते क्षोभन्ते	तोभते तोभेते तोभन्ते
क्षोभसे क्षोभेथे क्षोभध्वे	तोभसे तोभेथे तोभध्वे
क्षोभे क्षोभावहे क्षोभामहे	तोभे तोभावहे तोभामहे

वाक्येषु प्रयोगः-

(पुं.) सः पठन् अस्ति, तौ पठन्तौ स्तः, ते पठन्तः सन्ति।
त्वं पठन् असि, युवां पठन्तौ स्थः यूयं पठन्तः स्थ।
अहं पठन् अस्मि, आवां पठन्तौ स्वः, वयं पठन्तः स्मः।

(स्त्री.) सीता पठन्ती अस्ति, सीते पठन्त्यौ स्तः, सीताः पठन्त्यः सन्ति।
बालिका पठन्ती अस्ति, बालिके पठन्त्यौ स्तः, बालिकाः पठन्त्यः सन्ति।
छात्रा लिखन्ती अस्ति, छात्रे लिखन्त्यौ स्तः, छात्राः लिखन्त्यः सन्ति।

सावधानाः पठन्तु-

राम: संस्कृतं पठति। अहं रामं पश्यामि। रामेण सह गच्छ। रामाय फलं देहि। रामात् सुन्दरः कोऽपि नास्ति। इदं रामस्य पुस्तकम् अस्ति। अहं रामे विश्वसिमि (विश्वासं करोमि इति भाव:)। हे राम ! किमर्थं त्वं स्वपाठं सम्यक् न पठसि?

ल्यप्प्रत्ययः-

यदा धातुभ्य: पूर्वम् उपसर्ग: भवति तदा क्त्वा (त्वा) स्थाने ल्यप् भवति।

उदाहरणम्-

धातुः प्रत्ययः	उपसर्गः	ल्यप् (य)
दा+क्त्वा=दत्वा	आ	आदाय
गम्+क्त्वा=गत्वा	आ	आगत्य
श्रु+क्त्वा=श्रुत्वा	सम्	संश्रुत्य
पठ्+क्त्वा=पठित्वा	सम्	संपठ्य
गम्+क्त्वा=गत्वा	अनु	अनुगम्य
नी+क्त्वा=नीत्वा	आ	आनीय
स्था+क्त्वा=स्थित्वा	प्र	प्रस्थाय
पा+क्त्वा=पीत्वा	नि	निपीय
दृश्+क्त्वा=दृष्ट्वा	सम्	सन्दृश्य
मन्+क्त्वा=मत्वा	अनु	अनुमत्य

वाक्येषु प्रयोगः-

छात्र: पुस्तकानि आदाय विद्यालयं गच्छति।
गुरु: विद्यालयम् आगत्य छात्रान् पाठयति।
विद्यार्थी गीतं संश्रुत्य पाठं सम्पठ्य विद्यालयात् आगच्छति।
कूपात् जलम् आनीय पिब।

सेव्धातोः पञ्चलकारेषु रूपाणि कण्ठस्थं कुरुत-

लट्- सेवते सेवेते सेवन्ते
सेवसे सेवेथे सेवध्वे
सेवे सेवावहे सेवामहे

लृट्- सेविष्यते सेविष्येते सेविष्यन्ते
सेविष्यसे सेविष्येथे सेविष्यध्वे
सेविष्ये सेविष्यावहे सेविष्यामहे

लङ्- असेवत असेवेताम् असेवन्त
असेवथा: असेवेथाम् असेवध्वम्
असेवे असेवावहि असेवामहि

लोट्-सेवतां सेवेतां सेवन्ताम्
सेवस्व सेवेथां सेवध्वम्
सेवै सेवावहै सेवामहै

लिङ्-	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

प्रयोगः-

सः गुरुं सेवते, तौ गुरुं सेवेते, ते गुरुं सेवन्ते
त्वं गुरुं सेवसे, युवां गुरुं सेवेथे, यूयं गुरुं सेवध्वे
अहं गुरुं सेवे, आवां गुरुं सेवावहे, वयं गुरुं सेवामहे

संकल्पः-

यत्र यत्र गच्छसि-पश्य तत्र संस्कृतम्।
संस्कृतेन सम्भाषणं कुरु, जीवनस्य परिवर्तनं कुरु।
संस्कृतस्य सेवया पवित्रमस्तु जीवनम्।
उपरि पश्य-संस्कृतभाषाम्
नीचैः पश्य-संस्कृतभाषाम्
अत्र पश्य-संस्कृतभाषाम्
तत्र पश्य-संस्कृतभाषाम्

शब्दरूपाणि स्मरत-तत्-(वह)-

पुल्लिङ्गे-सः तौ ते, तं तौ तान्, तेन ताभ्यां तैः, तस्मै ताभ्यां तेभ्यः, तस्मात् ताभ्यां तेभ्यः, तस्य तयोः तेषां, तस्मिन् तयोः तेषु।

स्त्रीलिङ्गे-सा ते ताः, तां ते ताः, तया ताभ्यां ताभिः, तस्यै ताभ्यां ताभ्यः, तस्याः ताभ्यां ताभ्यः, तस्याः तयोः तासाम् तस्यां तयोः तासु।

नपुंसके-तद् ते तानि, तद् ते तानि (शेषं पुंवत्)

अनयैव रीत्या-एतद्, इदम्, युष्मद्, अस्मद्, अदस् शब्दानां रूपाणि रूपावलि-सहयोगेन कण्ठस्थीकर्तव्यानि।

***

अष्टाविंशः पाठः

छात्रेभ्यः निर्देशवाक्यानि-

अत्र आगम्यताम्=यहाँ आइये= Come here.
तत्र गम्यताम्=वहाँ जाइये= Go there.
दूरम् अपसृयताम्=दूर हटिये= Go away.
सम्यक् स्थीयताम्=ठीक से खड़े होइये= Stand properly.
सम्यक् उपविश्यताम्=ठीक से बैठिये= Sit properly.
पाठः पठ्यताम्=पाठ पढ़िये= Learn the lesson.
लेखः लिख्यताम्=लेख लिखिये= Write on article.
सम्यक् पठ्यताम्=ठीक से पढ़िये= Read properly.
सुन्दरं लिख्यताम्=अच्छा लिखिये= Write properly.
अनुकरणं न क्रियताम्=नकल मत करो= Do not copy.
तूष्णीं स्थीयताम्=चुप बैठिये= Silent.
लेखपुस्तिका आनीयताम्=कापी ले आइये=Bring an exercise book.
पाठः श्राव्यताम्=पाठ सुनाइये=
Pronounce lesson.
एकं मनोहरं गीतं श्राव्यताम्=एक मनोहर गीत सुनाइये=
Sing an interesting song.
एकः श्लोकः श्राव्यताम्=एक श्लोक सुनाइये=Read a stanza.
श्रूयताम्/आकर्ण्यताम्=सुनिये= Listen.
शीघ्रम् आगम्यताम्=जल्दी आइये= Come soon.
उत्थीयताम्=खड़े होइये= Stand up.
विरम्यताम्=रुकिये= Stop.
कपाटम् उद्घाट्यताम्=दरवाजा खोलिये= Open the door.
प्रकोष्ठः सम्मार्ज्यताम्=कमरा साफ कीजिये=Clean the room.
स्वकार्यं स्वयमेव क्रियताम्=अपना काम स्वयं कीजिये=
Do yourself own work.

प्रश्नवाक्यानि-

भवत: नाम किम्?=आपका क्या नाम है? What is your name?
किं कार्यम् अस्ति?=क्या काम है? What is the work?
किम् इच्छति?=क्या चाहते हैं? What do you want?
कापि वार्ता अस्ति?=क्या बात है? There is any news?
सर्वं शोभनं वर्तते?=सब कुछ ठीक ठाक है? Everything is well?
पुनः दर्शनं दीयताम्=फिर दर्शन दीजिए। See you again.

द्वयोः छात्रयोः वार्तालापः-

प्रथमः- नमो नमः। कुत आगच्छति भवान्?
द्वितीयः- नमामि, नमामि। विद्यालयतः आगच्छामि।

प्र०- अद्य तु अवकाशः अस्ति, भवान् किमर्थं तत्र गतवान्?

द्वि०- सत्यम्, परन्तु मम विद्यालये सम्प्रति संस्कृतसंभाषणशिविरं प्रचलत् अस्ति। शिविरे भागं गृहीत्वा आगच्छामि।

प्र०- संस्कृतसंभाषणेन कः लाभः? व्यवहारस्तु कयापि भाषया चालयितुं शक्यते। किम् असंस्कृतज्ञानां व्यवहारः न प्रचलति?

द्वि०- सत्यम्, न केवलं भवान् अपितु श्रेष्ठाः उच्चपदे स्थिताः संस्कृतपण्डिता अपि एवंविधं प्रश्नं कुर्वन्ति। अतः सावधानो भूत्वा शृणोतु एतस्य उत्तरम्।

- संस्कृतभाषा अन्या भाषा इव सामान्या भाषा नास्ति। इयं तु सर्वासाम् भारतीयभाषाणां जननी अस्ति। अथ च भारतस्य सर्वमपि ज्ञानं संस्कृतभाषायामेव सुरक्षितम् अस्ति।

अतः संस्कृतभाषाया ज्ञानं विना कस्यापि भारतीयस्य ज्ञानं वस्तुतः परिपूर्णं न जायते। अत एव संस्कृतभाषायां सम्भाषणं नाम न केवलं व्यवहारचालनम् अपितु **प्राचीनतमभारतीयसंस्कृत्या सह स्व-सम्पर्कसाधनम् अपि अस्ति।**

प्र०- सम्यक् अवगतम्। क्षम्यतां निरर्थकप्रश्नस्य कृते, अयं जनः।

***

नवविंशः पाठः

वाच्यपरिवर्तनाभ्यासः -

कर्तृवाच्यम्	कर्मवाच्यम्
१) अहं पुस्तकं पठामि।	मया पुस्तकं पठ्यते।
२) त्वं पुस्तकं पठसि।	त्वया पुस्तकं पठ्यते।
३) भवान् पुस्तकं पठति।	भवता पुस्तकं पठ्यते।
४) सा पुस्तकं पठति।	तया पुस्तकं पठ्यते।
५) अयं बालकः पठति।	अनेन बालकेन पठ्यते।
६) इयं बालिका पठति।	अनया बालिकया पठ्यते।
७) भवती पुराणं पठति।	भवत्या पुराणं पठ्यते।
८) आवां पठावः।	आवाभ्यां पठ्यते।
९) युवां पठथः।	युवाभ्यां पठ्यते।
१०) इमे बालकाः पुस्तकं पठन्ति।	एभिः बालकैः पुस्तकं पठ्यते।
११) इमाः बालिकाः पुस्तकं पठन्ति।	आभिः बालिकाभिः पुस्तकं पठ्यते।
१२) भवन्तः पुस्तकं पठन्ति।	भवद्भिः पुस्तकं पठ्यते।
१३) अहं श्लोकं पठामि।	मया श्लोकः पठ्यते।
१४) रामः कथां पठति।	रामेण कथा पठ्यते।
१५) केशवः ग्रन्थं पठति।	केशवेन ग्रन्थः पठ्यते।
१६) अहं श्लोकौ पठामि।	मया श्लोकौ पठ्येते।
१७) अहं श्लोकान् पठामि।	मया श्लोकाः पठ्यन्ते।
१८) अहं पुस्तके पठामि।	मया पुस्तके पठ्येते।
१९) अहं पुस्तकानि पठामि।	मया पुस्तकानि पठ्यन्ते।
२०) सः कथां कथयति।	तेन कथा कथ्यते।
२१) सः कथे कथयति।	तेन कथे कथ्येते।
२२) सः कथाः कथयति।	तेन कथाः कथ्यन्ते।
२३) रामः विद्यालयं गच्छति।	रामेण विद्यालयः गम्यते।
२४) कृष्णः वाराणसी गच्छति।	कृष्णेन वाराणसी गम्यते।

२५) गोपालः अध्ययनं करोति।	गोपालेन अध्ययनं क्रियते।
२६) हरिः पत्रं प्रेषयति।	हरिणा पत्रं प्रेष्यते।
२७) छात्रः संस्कृतं पठति।	छात्रेण संस्कृतं पठ्यते।
२८) अध्यापकः छात्रं पाठयति।	अध्यापकेन छात्रः पाठ्यते।

सेव्धातुवत् निम्नोक्तधातूनां रूपाणि चालयत-

धातवः		उदाहरणम्
कम्प्=काँपना=Shake	कम्पते	वृक्षः कम्पते।
काश्=चमकना=Shine	काशते	आकाशे चन्द्रः काशते।
कास्=खाँसना=To cough	कासते	वृद्धः कासते।
क्षम्=क्षमा करना=Pardon	क्षमते	नृपः सेवकं क्षमते।
गर्ह्=निन्दा करना=Backbiting	गर्हते	दुर्जनः सज्जनं गर्हते।
गाह्=डुबकी लगाना=Dip	गाहते	मुनिः नद्यां गाहते।
ग्रस्=खाना=Eat	ग्रसते	सर्पः भेकं ग्रसते।
घट्=घटित होना=To be	घटते	वार्ता घटते।
त्रप्=लज्जा करना=Shame	त्रपते	वधूः त्रपते।
दय्=दया करना=To be kind	दयते	स्वामी दयते।
ध्वंस्=नष्ट करना=To distroy	ध्वंसते	गृहं ध्वंसते।
पर्द्=हवा छोड़ना=To relise gas	पर्दते	मनुष्यः पर्दते।
प्रथ्=फैलना=Expand	प्रथते	गुणवतां कीर्तिः प्रथते।
भाष्=कहना=Tell	भाषते	रामः सर्वदा सत्यं भाषते।
भास्=चमकना=Shine	भासते	आकाशे रविः भासते।
भिक्ष्=माँगना=Beg	भिक्षते	भिक्षुकः अहर्निशं भिक्षते।
भ्रंश्=गिरना=Fall	भ्रंशते	पाषाणखण्डः पर्वतात् भ्रंशते।

इदमप्यनुसन्धेयम्-

कः पठति? छात्रः पठति, किं पठति? संस्कृतभाषाम्।
का लिखति? छात्रा लिखति, केन लिखति? कलमेन।
कः धावति? अश्वः धावति, कुत्र धावति? मार्गे।
कः नृत्यति? मयूरः नृत्यति, कुत्र नृत्यति? वने।
किं पतति? पुष्पं पतति, कस्मात् पतति? वृक्षात्।
कः तरति? नाविकः तरति, कुत्र तरति? जले।
का पचति? माता पचति, किं पचति? भोजनम्।

कः पाठयति? गुरुः पाठयति, किं पाठयति? पुस्तकम्।

कः नमति? छात्रः नमति, कं नमति? गुरुम्।

संकल्पः-

संस्कृतस्य सेवया पवित्रमस्तु जीवनम्।
संस्कृताय अर्पितं पवित्रमस्तु मे धनम्।
संस्कृतस्य पाठनं संस्कृतस्य गायनम्।
संस्कृतेन नर्तनं कुरुष्व मित्र ! सर्वदा।।

१) संस्कृतज्ञानं विना भारतीयानां ज्ञानम् अपूर्णम्।
२) संस्कृतं विना भारतीयासंस्कृतिः जीवनरहिता।
३) संस्कृतं विना भारतीयेतिहासः अपूर्णः।
४) संस्कृतं विना भारतीयसभ्यता निष्प्राणा।
५) संस्कृतं विना भारतं न भारतम्।

स्मरणीय-श्लोकाः

त्यज दुर्जनसंसर्गं भज साधु समागमम्।
कुरु पुण्यमहोरात्रं स्मर नित्यमनित्यताम्।।

धर्मं चरत माधर्मं सत्यं वदत मानृतम्।
दीर्घं पश्यत मा ह्रस्वं परं पश्यत मापरम्।।

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

धृतिः क्षमा दमोऽस्त्येयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीः विद्या सत्यमक्रोधः दशकं धर्मलक्षणम्।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

श्रूयतां सर्वधर्मस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

गुह्यं ब्रह्म तदिदं वो ब्रवीमि।
न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्।।

***

त्रिंशः पाठः

संस्कृतस्य ज्ञानं विना ज्ञानम् अपूर्णम्

संस्कृतशब्दः -

सम् उपसर्गपूर्वकात् कृधातोः क्तप्रत्यये कृते संस्कृतशब्दः निष्पद्यते। विग्रहश्च अस्य सम्यक् कृतं संस्कृतम् इति भवति। अतः यत् किमपि सम्यक्रूपेण कृतं भवति तत् संस्कृतम् अस्ति। भोजनम्, वस्त्रम्, गृहम्, व्यवहारः, आचरणम्, वाणी, भाषा, जनः परिवारः, समाजः, राष्ट्रम्, विश्वम्, इत्यादिषु सर्वेषु पदार्थेषु विषयेषु च संस्कृतम् प्रयोक्तुं शक्यते। अत्र भाषादृष्ट्या संस्कृतस्य प्रयोगः विधीयते।

प्राचीनत्वं श्रेष्ठत्वञ्च-

संसारे बहव्यः भाषाः वर्तन्ते, तासु संस्कृतमपि एका भाषा। इयं भाषा सर्वप्राचीना अस्ति, यतो हि बुद्धाविर्भावादपि पूर्वं संस्कृतभाषा उन्नतिशिखरं गता आसीत्। संस्कृतभाषायां निबद्धः ऋग्वेदग्रन्थः विश्वस्य प्राचीनतमः ग्रन्थः वर्तते । संस्कृतभाषा न केवलं प्राचीनतमा एव अपितु सर्वगुणगणालङ्कृतापि अस्ति। संसारे वर्तमानाः अन्याः भाषाः देश-कालभेदेन पृथक्-पृथक् उच्चार्यन्ते परं संस्कृतभाषायाः उच्चारणं लेखनं भाषणं च सर्वत्र समानानि भवन्ति। आङ्गलभाषायां लेखने पठने च महान् विभेदः दृश्यते। (Put) पुट् उच्चार्यते तथा च (But) बट। एवमेव **साइलेन्ट** वर्णानां समस्या पृथक् अस्ति। अत एव स्पष्टतया वक्तुं शक्यते यत् लेखन-भाषण-उच्चारणदृष्ट्यापि संस्कृतभाषा सर्वश्रेष्ठा अस्ति। इदानीम् अनुसन्धातारः वैज्ञानिका अपि प्रतिपादयन्ति यत् संस्कृतभाषा स्वोच्चारणसाम्यवैशिष्ट्यात् संगणकस्य (कम्प्युटर) कृते अतीवोपयोगिनी भविष्यति इति। एतत् सम्बन्धे भारते विदेशेष्वपि च अनुसन्धानं जायमानमस्ति।

सर्वभारतीयभाषाणां जननी-

भारतवर्षेऽस्मिन् तमिल-बङ्गाली-मराठी-गुजराती-ओडिसी-पञ्जाबी-हिन्दी-गोरखाली-आसामी-पालि-प्रभृतयः भाषाः सन्ति। एतासां भाषाणां व्यवहारकर्तारः कश्मीरात्-कन्याकुमारी पर्यन्तं वर्तमानाः, हिमालयं परितः प्रसृताः जनाश्च कोटि-कोटि संख्याकाः वर्तन्ते। एताः सर्वा एव भाषाः संस्कृतभाषायाः पुत्र्यः पौत्र्यश्च सन्ति। नास्त्यत्र सन्देहस्यावसरः। सर्वासु भाषासु संस्कृतस्य शब्दाः बाहुल्येन लभ्यन्ते। एतासां व्याकरणसम्बन्धिनियमा अपि प्रायः संस्कृत- व्याकरणानुकूला एव भवन्ति। कवितासु संस्कृतच्छन्दसां प्रयोगाः अपि यत्र तत्र दरीदृश्यन्ते। एतासु भाषासु वर्तमानाः प्रायःसर्वेऽपि शब्दाः तत्सम तद्भवरूपेण संस्कृतभाषायाः एव समागताः सन्ति। अतः संस्कृतस्य ज्ञानं विना कस्यापि भारतीयभाषायाः पूर्णं ज्ञानं केनापि कर्तुं न शक्यते।

सर्वधर्मसंप्रदायानां पोषिणी-

भारतवर्षे वैदिक-बौद्ध-जैनप्रभृतयो ये संप्रदायाः विद्यन्ते, तेषां मूलमपि संस्कृतमेव वर्तते। वैदिकानाम्-वेदेतिहास-पुराण-स्मृति-महाभारत-रामायणार्थशास्त्र-ज्योतिष-व्याकरणप्रभृतयो ग्रन्थाः संस्कृतभाषायामेव सन्ति। एवमेव **बौद्धानां** जातककथाः वैभाषिक-सौत्रान्तिक-विज्ञानवाद-शून्यवाद- सम्प्रदायानाम् प्रामाणिकाः आकरग्रन्थाः संस्कृतभाषायामेव सन्ति। बौद्ध- विद्वांसः अश्वघोष-नागार्जुन-धर्मकीर्ति-चन्द्रकीर्ति-स्थिरमति-शान्तिदेव-दिङ्नाग-असङ्ग-बसुबन्धु-कमलशील-प्रभृतयः संस्कृतभाषायामेव महत्वपूर्णकाव्यानां दार्शनिकग्रन्थानाञ्च प्रणयनं कृतवन्तः। संप्रति भोटभाषायां येऽपि दार्शनिकग्रन्थाः वर्तन्ते ते संस्कृतग्रन्थेभ्यः एव अनुदिताः सन्ति। यथा वैदिक-बौद्धयोराकरग्रन्थाः संस्कृते वर्तन्ते तथैव **जैनानामपि ग्रन्थाः** मूलरूपेण टीकारूपेण वा संस्कृतभाषायामेवोपनिबद्धाः। यद्यपि बौद्धानां मूलभाषा पालिः, जैनानाञ्च प्राकृतमस्ति, परन्तु संस्कृतभाषायाः महत्वं वैशिष्ट्यञ्चावगत्य तत्तत्सम्प्रदायाचार्यैः संस्कृतमेवाश्रितम्।

जैनानां प्रमुखग्रन्थाः-

गोम्मटसमरजीवकाण्ड-गोम्मटसमरकर्मकाण्ड-स्वामिकार्तिकेया-नुप्रेक्षा-परमात्मप्रकाश-प्रवचनसार-स्याद्वादमञ्जरी-बृहद्द्रव्य-संग्रहप्रभृतयो नैके ग्रन्थाः संस्कृतभाषायामेवोपनिबद्धाः सन्ति। भारतवर्षीयाः प्राचीनाः प्रमुखसम्प्रदायाः एते एव सन्ति। एतैः त्रिभिरेव संस्कृतं पूर्णरूपेणाश्रितमस्ति। तदनन्तरम् एतेभ्यः त्रिभ्यः प्रसूताः उपसम्प्रदायाः अपि ये ये सन्ति तेषां सर्वेषामपि मूलं संस्कृतमेव। अतः संस्कृतज्ञानं विना वैदिक-बौद्ध-जैनानां वास्तविकं रहस्यं नैव ज्ञातुं शक्यते।

कर्मकाण्डभाषा-

भारतवर्षे सञ्चाल्यमानानां कर्मकाण्डानां भाषा संस्कृतमेवास्ति। उत्तरे दक्षिणे चैक एव संकल्पः प्रोच्चार्यते। मठमन्दिराणां पुरोहितानाञ्च भाषा संस्कृतमेवास्ति। सर्वेऽपि भारतीयाः स्नानकाले श्लोकमिमं पठन्ति-

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति !
नर्मदे सिन्धु काबेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

सर्वत्रैव जन्मप्रभृति मरणं यावत् समायोज्यमानकर्मकाण्डेषु संस्कृतभाषायाः एव प्रयोगो दृश्यते। एवमेव रामलीला-कृष्णलीला-प्रभृतिषु लीलास्वपि संस्कृतस्य महान् प्रभावः दृश्यते। अत एवोक्तं चिन्तकेन विदुषा-

भारतीयैकतासाधकं संस्कृतम्
भारतीयत्वसंपादकं संस्कृतम्।
ज्ञानपुञ्जप्रभादर्शकं संस्कृतम्
सर्वदानन्दसन्दोहदं संस्कृतम्।। (पं०वासुदेवद्विवेदी शास्त्री)

सरलतमभाषा-

इदानीं यावत् संस्कृतं कठिनम् इति सर्वत्र प्रचार्यते। परं संस्कृत-भाषेयम् अस्ति सरलतमा। संस्कृतज्ञानशून्योऽपि जनः केवलं दशदिवसेषु (प्रतिदिनं घण्टाद्वयमेव) सामान्यसंस्कृतसंभाषणं कर्तुं शक्नोति। सम्प्रति एतस्य प्रयोगाः साफल्येन भारतवर्षे विदेशेष्वपि प्रचलन्ति। एतत् न कल्पनामात्रम् अपितु प्रत्यक्षसिद्धम् अस्ति। संस्कृतं विहाय अन्या कापि भाषा केवलं दशदिवसेषु ज्ञातुं न शक्यते। अतः संस्कृतं कठिनम् इति

कथनं सर्वथा असत्यम् अस्ति। संस्कृतं कठिनमिति विषये एकस्य पण्डितस्य इदं कथनं मननीयम्-

संस्कृत को कुछ कठिन समझ कर जो पढ़ने से डरते हैं।
वे आगे और कौन सा कठिन काम कर सकते हैं?
फिर संस्कृत तो बहुत सरल है इसे कठिन बतलाना।
अपनी नासमझी है भारी या यह एक बहाना।।

संस्कृतं सर्वेषां भाषा-

संस्कृतभाषा कस्यापि एकस्य देशस्य, धर्मस्य, सम्प्रदायस्य, वर्गस्य, एकस्याः जातेः वा भाषा नास्ति। अपितु इयं भाषा सर्वेषां मानवानां, सर्वेषां देशानां, सर्वासां जातीनाञ्च भाषा अस्ति। अतः संस्कृतं केवलं ब्राह्मणानां, हिन्दूनां, धार्मिकाणां, कर्मकाण्डानां भाषा अस्तीति मतं सर्वथा निर्मूलं स्वार्थसंवलितञ्च मन्तव्यम्। सर्वे मानवाः समानरूपेण संस्कृतम् पठितुं शक्नुवन्ति, **इत्यत्र नास्ति मनागपि शङ्कालेशः।**

संस्कृते सर्वमस्ति-

यत् यन्मानवानां कृते आवश्यकमस्ति तत् सर्वमपि संस्कृतवाङ्मये राजते। यथा-राजशास्त्रम्, अर्थशास्त्रम्, कामशास्त्रम्, नीतिशास्त्रम्, शिल्पशास्त्रम्, वास्तुशास्त्रम्, आयुर्वेदशास्त्रम्, नाट्यशास्त्रम्, इत्यादीनि सर्वाणि मानवोपयोगीनि शास्त्राणि विलसन्ति। अतएव महाभारतकारः सगर्वं वदति-**यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।** एतस्मादेव सर्वैः मानवैः अवश्यमेव संस्कृतं पठनीयं, पाठनीयं, प्रचारणीयञ्च इति सादरं निवेद्य विरम्यते।

अन्ते चेदमेव काम्यते-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।

ॐ सह नाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै।।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

***